हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-179, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, गुरुवार 12 दिसम्बर 2024

अब किन्नर, पूर्व सैनिक व शिक्षक भी करेंगे डालसा के लिए...02

गोधरा कांड से पूरा देश मर्माहत हुआ थाः अभिषेक गुप्ता...06

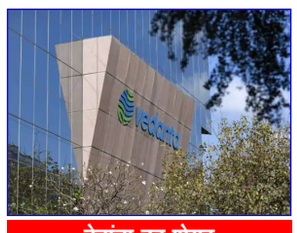

वेदांता का शेयर रिकॉर्ड हाई पर

सोना 694 रुपए बढ़कर 77869 रुपए पर पहुंचा

पैन 2.0 सबको बनवाना जरूरी नहीं

भारत, 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा : मुख्यमंत्री योगी

बस्ती, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत तेजी से विकास कर रहा है और 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र बन जाएगा। कर्मा देवी शिक्षण संस्थान समूह के 15वां स्थापना दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए श्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत तेजी से विकास की ओर निरंतर अग्रसर है भारत को विकसित देश बनाने के लिए हमें आत्मनिर्भर होना पड़ेगा और इसके लिए पहले हमें आधुनिक शिक्षा ग्रहण करनी होगी। जब हमारा गांव ,नगर, जिला,प्रदेश आत्म निर्भर बनेगा तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा। भारत पूरी दुनिया में प्रत्येक क्षेत्र में अपना झंडा बुलंद कर रहा है। कोरोना काल में जिस तरीके से चीन ने भारत को दवा देने से मना कर दिया था और धोखा दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फार्मेसी उद्योग ने दवा बनाकर पूरे विश्व को एक नया संदेश दिया। उन्होंने कहा कि 1947 से 2014 तक भारत आर्थिक व्यवस्था से ऊपर-नीचे उठकर 11 वे पायदान पर था लेकिन 2014 के बाद से भारत देश की पांचवी अर्थव्यवस्था बन गई। सकारात्मक सोच हमें बहुत आगे ले जा सकती है सकारात्मक सोच से ही भारत बहुत तेजी से विकासशील हो रहा है। नकारात्मक सोच हमें गड्ढे में गिरा सकती है इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक सोच से आगे बढ़ना चाहिए। भारत की भाषाएं भारत की एकता का प्रतीक है हमें सभी भाषाओं का अध्ययन करना चाहिए। एक भारत नेक भारत के लिए हमें सदैव कार्य करते रहना चाहिए।

उन्होंने कहा कि पूर्वांचल के लोग 50 साल इसलिए पीछे हो गए हैं क्योंकि पिछली सरकारों ने आधुनिकता, शिक्षा, संसाधन पर ध्यान नहीं दिया था पिछली सरकारों ने समस्या को समस्या समझा उसको निस्तारण करने से पीछे भागते रहे। इसी कारण से यहां के युवा

पलायन करने लगे। अगर उस समय फार्मेसी कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज,ला कॉलेज होते तो आज यहां के युवा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अलग छाप छोड़ रहे होते। फार्मेसी क्षेत्र बहुत बड़ा क्षेत्र है। बुंदेलखंड में फार्मेसी को आगे बढ़ाने के लिए उद्योग स्थापित किया गया है। पूरी दुनिया आपका इंतजार कर रही है आप एक सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते हुए सही दिशा में सही काम करे। पूरी दुनिया में जो सबसे अच्छी 100 कंपनियां है उनमें से 20 कंपनियों के सीईओ भारत के हैं जो बेहद ही गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि सरकार और समाज जब मिलकर काम करेगी तभी हमारा गांव ,नगर, जिला , प्रदेश विकास की ओर आगे बढ़ेगा। बस्ती में एक कवि आए थे उन्होंने बहुत पहले कहा था बस्ती को 'बस्ती को बस्ती कहूं , काके कहूं उजाड़' लेकिन अब बस्ती एक विकसित नगर बन गया है। बस्ती में मेडिकल कॉलेज की स्थापना की गई है। यहां की भूमि भगवान श्री राम के जन्म के लिए महाराज दशरथ जी ने पुत्रेष्टि यज्ञ के लिए चुना था। बस्ती की भूमि वंदनीय है। पूर्वी उत्तर प्रदेश संसाधनों के मामले में हमेशा उपेक्षित रहा है लेकिन प्रदेश सरकार ने बस्ती, सिद्धार्थनगर, देवरिया, महाराजगंज में मेडिकल कॉलेज स्थापित करके स्वास्थ्य क्षेत्र को एक नई दिशा प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि आज ही के दिन मुंडेरवा चीनी मिल में अन्नदाता किसान प्रदर्शन कर रहे थे उस दौरान गोली चलने से तीन किसान शहीद हो गए थे और पिछली सरकार ने मुंडेरवा चीनी मिल को बेच दिया था यहां के जनप्रतिनिधि ने जब मुझे अवगत कराया तो मेरे द्वारा पुनः चीनी मिल का शुभारंभ कराया गया। केंद्र तथा प्रदेश सरकार किसानों की आय दुगनी करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। हाल ही में उत्तर प्रदेश से एक टीम मास्को गई थी जहां पर आम के बाजार में उन्होंने 8 सौ से लेकर 1 हजार रुपया किलो तक के आम बिकने का अध्ययन किया। बस्ती जनपद की भूमि आम्रपाली आम की जननी है अगर यहां बाजार में 60 -70 रुपए किलो आम बिक रहे है और हम मास्को में आम बेचने के लिए अगर 2 सौ रुपया खर्च करके बेचे तो हमारे अन्नदाता को कई गुना मुनाफा होगा।

महाराष्ट्र में अंबेडकर स्मारक में तोड़फोड़ के बाद हिंसा

परभणी में भीड़ ने दुकानें-गाड़ियां जलाईं, पुलिस ने लाठीचार्ज किया, आरोपी गिरफ्तार

परभणी, एजेंसी।

महाराष्ट्र के परभणी में बुधवार को अंबेडकर स्मारक में तोड़फोड़ के विरोध में बुलाए गए बंद के दौरान हिंसा भड़क गई है। परभणी के कई इलाकों में दुकानों-गाड़ियों में तोड़फोड़ और आगजनी की गई। भीड़ को काबू करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। कुछ इलाकों में लाठीचार्ज भी किया गया। परभणी में बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है। प्रशासन ने इलाके में धारा 144 लगा दी है। परभणी से लगे हिंगोली में भी हिंसा हुई है। पुलिस के मुताबिक आरोपी सोपन दत्तात्राव पवार (45) ने मंगलवार को रेलवे स्टेशन के सामने अंबेडकर स्मारक में संविधान की प्रतिकृति को तोड़ने की कोशिश की। इसके बाद लोगों ने उसे बुरी तरह पीटा। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। भीड़ ने रिहायशी इलाकों में भी पत्थरबाजी की संविधान की प्रति तोड़ने के खिलाफ लोगों ने बुधवार को परभणी बंद बुलाया था। इस दौरान आरोपी को फांसी की सजा देने की मांग की गई। बंद के दौरान हिंसा भड़क गई और लोगों ने तोड़फोड़-आगजनी शुरू कर दी। कई रिहायशी इमारतों पर भी पत्थरबाजी की गई। कानपुर के घाटमपुर के गांव नेहुरापारा में 29 अक्टूबर 2024 को अराजक तत्वों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को खंडित कर दिया। खंडित प्रतिमा को देखते ही गांव के सैकड़ों लोग सड़क पर उतर आए और बवाल शुरू कर दिया। जानकारी मिलते ही कानपुर एडीसीपी मनोज कुमार पांडेय सर्किल फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे उन्होंने ग्रामीणों को समझाया है।

केजरीवाल बोले, आप अपने दम पर दिल्ली चुनाव लड़ेगी

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के बीच गठबंधन की अटकलों को अरविंद केजरीवाल ने खारिज कर दिया। आप प्रमुख केजरीवाल ने कहा है कि आम आदमी पार्टी अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। उसके कांग्रेस के साथ किसी भी तरह के गठबंधन की संभावना नहीं है। बुधवार को यह खबर सामने आई थी कि आप दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 15 सीट देने पर विचार कर रही है, लेकिन केजरीवाल ने एक्स पर पोस्ट के जरिए गठबंधन की बात को नकार दिया है। आप राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने कहा कि आने वाला दिल्ली चुनाव आम आदमी पार्टी अपने संगठन की ताकत और राजनीतिक बलबूते पर लड़ेगी। कांग्रेस और आप के बीच अलायंस की खबरें निराधार हैं। आप पिछले तीन दिल्ली चुनाव अपने बलबूते पर लड़ती, जीतती और सरकार बनाकर उसे चलाती आई है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी (आप) ने सोमवार को 20 उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट जारी की। इसमें 17 मौजूदा विधायकों के टिकट काट दिए गए हैं। 3 प्रत्याशियों की सीट बदली गई है। मनीष सिसोदिया को जंगीपुरा से, राखी बिड़लान को मादीपुर सीट दी गई है। हाल ही में शामिल हुए अवध ओझा पटपड़गंज से चुनाव लड़ेंगे। दिल्ली के विधानसभा चुनाव में अभी करीब दो महीने बाकी हैं।

वैश्विक चिंताओं को दूर करने के लिए हितधारकों के बीच भागीदारी हो: निर्मला सीतारमण

नयी दिल्ली, एजेंसी।

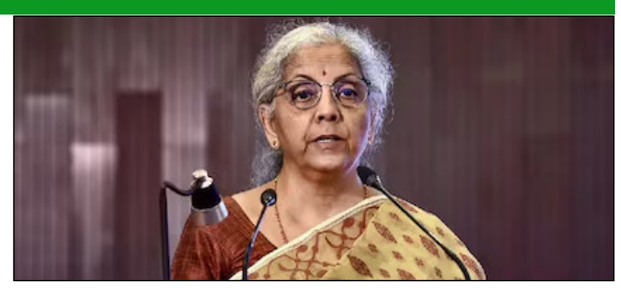

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज कहा कि वर्तमान में अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करने वाली अधिकांश चुनौतियाँ - प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और सतत विकास, आपूर्ति श्रृंखलाएँ, आदि - वैश्विक प्रकृति की हैं तथा उद्योग, नीति निर्माताओं और नागरिकों के लिए समन्वित दृष्टिकोण के माध्यम से सामूहिक रूप से काम करना अनिवार्य हो गया है ताकि मौजूदा चिंताओं को दूर किया जा सके और सदी के मध्य में प्रवेश करते समय ग्लोबल साउथ में नागरिकों के लिए बेहतर जीवन सुनिश्चित किया जा सके। श्रीमती सीतारमण ने वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग और भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा आयोजित वैश्विक आर्थिक नीति मंच 2024 के उद्घाटन सत्र के दौरान यह बात कही। उन्होंने पाँच प्राथमिकताएँ बताईं, जिनके बारे में उनका मानना है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए दशकीय प्राथमिकताएँ होनी चाहिए, जो सम्मेलन का विषय है। उन्होंने कहा कि इन पांच प्राथमिकताओं में पहला है वैश्विक शांति बहाल करना, जिसके लिए सभी हितधारकों को भू-राजनीतिक व्यवधानों और युद्धों से बचने में मदद करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए, जो आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान पैदा करते हैं, खाद्य मूल्य श्रृंखलाओं को प्रभावित करते हैं और मुद्रास्फीति को बढ़ावा देते हैं। दूसरे, आपूर्ति श्रृंखलाओं और उत्पादन केंद्रों के पीछे आर्थिक सिद्धांतों के महत्व को रेखांकित करते हुए, उनका दृढ़ मत था कि आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के रास्ते में कोई भी राजनीतिक, भू-राजनीतिक या रणनीतिक जोखिम नहीं आना चाहिए जो विकास और कल्याण को बाधित करता है। वित्त मंत्री ने बाद में जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को तीसरी प्राथमिकता के रूप में संदर्भित किया, जिसमें उन्होंने जोर देकर कहा कि कड़ी मेहनत से अर्जित धन, संपत्ति और जीवन को जलवायु संबंधी अनिश्चितताओं के लिए बंधक नहीं बनाया जाना चाहिए।

2035 तक भारत स्थापित करेगा अपना स्पेस स्टेशन

इसका नाम 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन' होगा, 2040 तक भारतीय को चांद पर उतारा जाएगा

> हम अपना अंतरिक्ष स्टेशन बनाने जा रहे हैं। अमेरिका और कुछ अन्य देशों के बाद ऐसा करने वाले देशों में हम शामिल होंगे।
>
> **जितेंद्र सिंह**
> **अंतरिक्ष राज्य मंत्री**

नई दिल्ली, एजेंसी।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बुधवार को ऐलान किया कि भारत 2035 तक अपना स्पेस स्टेशन स्थापित करेगा। इसे 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन' नाम दिया जाएगा। इसके साथ ही, 2040 तक एक भारतीय को चंद्रमा पर भेजने की योजना है। दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में डॉ. सिंह ने बताया कि 2025 के अंत तक या 2026 की शुरुआत में, गगनयान मिशन के तहत पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में जाएगा। साथ ही भारत अपने गहरे समुद्र मिशन के तहत 6,000 मीटर की गहराई में मानव को भेजने की योजना बना रहा है। उन्होंने कहा, सरकार स्पेस सेक्टर को मैनेज करने के लिए एक नए कानून पर काम कर रही है। इस सेक्टर में पिछले चार साल में प्राइवेट प्लेयर्स ने सैटेलाइट के निर्माण और लॉन्च में अहम भूमिका निभाई है, जिसके चलते काफी सुधार हुआ है। डॉ. सिंह ने कहा कि 2014 में जहां स्पेस स्टार्ट-अप्स की संख्या सिर्फ एक थी, वह अब बढ़कर 266 हो गई है। उन्होंने बताया कि भारत ने श्रीहरिकोटा लॉन्च साइट से अब तक 432 विदेशी उपग्रह लॉन्च किए हैं।

उपराष्ट्रपति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव सोरोस के खेल का हिस्सा: भाजपा

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आज आरोप लगाया कि उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव जॉर्ज सोरोस प्रायोजित एफडीएल-एपी फाउंडेशन के खेल का हिस्सा है। भाजपा के प्रवक्ता एवं सांसद डॉ संबित पात्रा ने यहां पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि विगत कुछ दिनों से आप देख रहे हैं कि राजनीतिक परिदृश्य किस प्रकार से उथल-पुथल में है। एक तरफ संविधान की चर्चा की ओर भारत का सदन बढ़ रहा है। वहीं एक बात स्पष्ट होती जा रही है कि कांग्रेस पार्टी के मन और कर्म में कहीं भी संविधान के प्रति सम्मान का भाव नहीं है। डा.पात्रा ने कहा कि आज सुबह से मीडिया में हम देख रहे हैं कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन के कुछ घटक दल ईवीएम और चुनाव आयोग को लेकर उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दाखिल करेंगे।

बैंकिंग सिस्टम मजबूत बनाना मेरी प्राथमिकता :आरबीआई गवर्नर

अभी आर्थिक स्थिति और ग्रोथ रेट से संबंधित पहलुओं की स्टडी करूंगा

नई दिल्ली, एजेंसी।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के नए गवर्नर संजय मल्होत्रा ने पदभार संभालने के बाद कहा कि देश की आर्थिक स्थिति, ग्रोथ रेट और इन्फ्लेशन से संबंधित सभी पहलुओं की डीटेल्ड स्टडी करूंगा। मेरी प्रायोरिटी बैंकिंग सिस्टम को मजबूत बनाना और फाइनेंशियल स्टेबिलिटी बनाए रखना है। सरकार ने रेवेन्यू सेक्रेटरी संजय मल्होत्रा को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) का नया गवर्नर नियुक्त किया है। उन्होंने आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास की जगह ली है। दास का कार्यकाल 10 दिसंबर 2024 को पूरा हो गया है। 11 दिसंबर से मल्होत्रा गवर्नर का पद संभाल लिया है। अपने अपॉइंटमेंट के एक दिन बाद संजय मल्होत्रा ने मंगलवार (10 दिसंबर) को कहा कि जॉइन करने के बाद वे सबसे पहले देश इकोनॉमी के लिए बेहतर उपाय को समझने में समय देंगे। मल्होत्रा ने कहा कि मुझे पहले जॉइन करने दीजिए, जरूरी विषयों को समझने दीजिए। यह एक अलग रोल है। आपको अर्थव्यवस्था के लिए जो भी जरूरी आवश्यक है, वह बेस्ट करना होगा। सरकार ने संजय मल्होत्रा को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) का नया गवर्नर नियुक्त किया है। संजय ने 6 साल गवर्नर रहे शक्तिकांत दास की जगह ली है। दास के कार्यकाल के दौरान उनके नाम कई सफल और उपयोगी फैसले जुड़े हैं। कोरोना महामारी के दौरान टैक्सपेयर्स को टैक्स पेमेंट में छूट, इकोनॉमी में लिक्विडिटी बनाए रखने और दुनियाभर में युद्ध के हालातों के बीच अर्थव्यवस्था को स्टेबल बनाए रखने के लिए जरूरी फैसले लेना हो शक्तिकांत दास हमेशा इसमें आगे की भूमिका में रहे। आज से अगले तीन साल के लिए संजय मल्होत्रा आरबीआई के गवर्नर रहेंगे। उनके साथ शक्तिकांत दास की विरासत जुड़ी है, जिसमें कुछ चीजें उनका काम आसान करेंगी, तो कुछ चुनौतियां पेश कर सकती हैं।

रेल संचालन को और सरल बनाने वाला 'रेल संशोधन विधेयक' लोकसभा में पारित

नयी दिल्ली, एजेंसी।

लोकसभा ने रेलवे के संचालन को ज्यादा सरल और सुविधाजनक बनाने तथा स्थानीय स्तर पर अधिकारियों को ज्यादा शक्ति देने के वास्ते दो पुराने कानूनों को जोड़कर बनाया गया 'रेल संशोधन विधेयक -2024' बुधवार को ध्वनिमत से पारित कर दिया। लोकसभा में रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने रेल संशोधन विधेयक पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए कहा कि सदस्यों ने कई अच्छे सुझाव दिए हैं। विधेयक की आवश्यकता संबंधी सवाल पर उन्होंने कहा कि विधेयक को सरल बनाने की जरूरत थी और इसमें 1905 तथा 1989 के संशोधन को मिलाकर कानून को सरल बनाया गया है। रेलवे का बहुत विकेंद्रीकरण हुआ है और उसका देश को बड़ा लाभ हुआ है क्योंकि अधिकारियों को लोगों की जरूरत के अनुसार काम करने का अधिकार मिला है। उन्होंने कहा कि पिछले दस साल के दौरान रेलवे में स्वच्छता के स्तर पर बहुत बदलाव आया है। इन दौरान करीब तीन लाख दस हजार नये टॉयलेट बनाए गये हैं और स्वदेशी तकनीकी से वंदेभारत रेल शुरु की गई और इसकी वजह से इसकी चर्चा पूरी दुनिया में है।

धनखड़ खुद को आरएसएस का एकलव्य बताते हैं: खड़गे

नई दिल्ली, एजेंसी।

राज्य सभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर इंडिया ब्लॉक ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- सभापति राज्यसभा में स्कूल के हेडमास्टर की तरह व्यवहार करते हैं। विपक्ष का सांसद 5 मिनट भाषण दे तो वे उस पर 10 मिनट तक टिप्पणी करते हैं। सभापति सदन के अंदर प्रतिपक्ष के नेताओं को अपने विरोधी के तौर पर देखते हैं। सीनियर-जूनियर कोई भी हो, विपक्षी नेताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर अपमानित करते हैं। उनके व्यवहार के कारण हम अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए मजबूर हुए हैं। सभापति राजनीति से परे होते हैं। आज सभापति नियमों को छोड़कर राजनीति ज्यादा कर रहे हैं। अंबेडकरजी ने संविधान में लिखा है कि भारत के उप-राष्ट्रपति राज्यसभा के सभापति होंगे। पहले राज्यसभा सभापति राधाकृष्णन ने 1952 में सांसदों से कहा था कि मैं किसी भी पार्टी से नहीं हूं। इसका मतलब है कि मैं सदन में हर पार्टी से जुड़ा हूं। इससे पहले आज अविश्वास प्रस्ताव के मुद्दे पर लोकसभा और राज्यसभा में हंगामा हुआ।

> **सरकार की तारीफ करते हैं, विपक्ष को विरोधी समझते हैं, अविश्वास प्रस्ताव की 4 वजह बताईं**

आबकारी नीति मामले में सिसोदिया को मिली राहत, सुप्रीम कोर्ट ने दी जमानत शर्तों में ढील

नयी दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने आबकारी नीति कथित घोटाला मामले में दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को राहत देते हुए जमानत की शर्तों में बुधवार को ढील दे दी। न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने सिसोदिया की जमानत के मामले में अपने पिछले आदेश में संशोधन करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता को हर सोमवार और गुरुवार को संबंधित जांच अधिकारी के समक्ष पेश होने की शर्त जरूरी नहीं है हालांकि, उच्चतम न्यायालय ने गत नौ अगस्त को श्री सिसोदिया को केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी)- दोनों मामलों में जमानत देकर उन्हें बड़ी राहत दी थी। अदालत ने यह देखते हुए जमानत दी थी कि मुकदमे की सुनवाई में देरी।

बिजली के निजीकरण के विरोध में राष्ट्रव्यापी आंदोलन की घोषणा

22 को लखनऊ और 25 दिसंबर को चंडीगढ़ में पंचायत

लखनऊ, संवाददाता।

पूर्वांचल और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगमों के निजीकरण को लेकर कर्मचारियों का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। बुधवार को लखनऊ में नेशनल कोऑर्डिनेशन कमेटी ऑफ इलेक्ट्रिसिटी इम्प्लॉइज एंड इंजीनियर्स (एनसीसीओईईई) की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक हुई, जिसमें निर्णय लिया गया कि उप्र में बिजली के निजीकरण की किसी भी एकतरफा कार्रवाई के विरोध में राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन होगा। 13 और 19 दिसंबर को निजीकरण के विरोध में देश भर में विरोध सभाएं की जाएंगी। 22 दिसंबर को लखनऊ में और 25 दिसंबर को चंडीगढ़ में निजीकरण के विरोध में विशाल बिजली पंचायत आयोजित की जाएंगी। एनसीसीओईईई ने निर्णय लिया कि यदि उत्तर प्रदेश में विद्युत वितरण निगमों के निजीकरण की कोई भी एकतरफा कार्रवाई प्रारंभ की गयी तो उसी दिन और बिना कोई नोटिस दिये देश के 27 लाख बिजली कर्मचारी सड़कों पर उतरने के लिए बाध्य होंगे और देशव्यापी विरोध प्रदर्शन करेंगे। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि चंडीगढ़ की विद्युत व्यवस्था जिस दिन निजी कम्पनी को हैंडओवर करने की कार्रवाई की गयी उसी दिन भी इसी प्रकार की राष्ट्रव्यापी कार्रवाई होगी।

> **पूर्वांचल और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगमों के निजीकरण को लेकर कर्मचारियों का आक्रोश बढ़ता जा रहा ह**

अब किन्नर, पूर्व सैनिक व शिक्षक भी करेंगे डालसा के लिए काम

⇨ समाज के हर तपके के लोगों को जागरूक बनाने के लिए डालसा की टीम पहुंचेगी घर-घर तक: पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन कर न्यायाधीश ने कहा ⇨ डालसा के साथ जुड़कर गौरवान्वित महसूस कर रही हूं: श्वेता किन्नर

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। समाज के हर तबके तक कानूनी जागरूकता फैलाने,सरकारी योजनाओं का लाभ लोगों को दिलवाने में मदद करने के लिए किन्नर,पूर्व सैनिक ,पूर्व शिक्षक भी डालसा के लिए काम करेंगे। झालसा के निर्देश पर समाज के हर तपके से जुड़े ऐसे दस लोगों को पीएलवी नियुक्त किया गया है। झालसा के निर्देश पर दस नए पारा लीगल वॉलिंटियर्स की नियुक्ति के बाद बुधवार से पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह चेयरमैन जिला विधिक सेवा प्राधिकार वीरेंद्र कुमार तिवारी व अवर न्यायाधीश राकेश रोशन ने किया। इस मौके पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कहा कि आम लोगों को सस्ता,सुलभ एवं त्वरित न्याय प्रदान करने की दिशा में अनेक सार्थक प्रयास किए गए हैं,इसी क्रम में विधि सेवा प्राधिकरण की ओर से विभिन्न इलाकों में पैरा लीगल वालंटियर की नियुक्ति की गई है। अवर न्यायाधीश सह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार (डालसा) राकेश रोशन ने बताया कि झालसा के निर्देश पर अबकी बार समाज के हर तबके से डालसा के प्रतिनिधि के रूप मे पैरा लीगल वालंटियर की नियुक्ति की गई है जिसमे किन्नर समुदाय से श्वेता किन्नर,शिवानी किन्नर, अशोक कुमार सिंह रिटायर्ड आर्मी मैन,डॉ.रुद्र नारायण दे, डॉ प्राण मोहन,शिक्षक वर्ग से उदय राम,संतोष कुमार , अजहरुद्दीन अंसारी, राजेश कुमार सिन्हा और सुंबुल केशर शामिल हैं जो ट्रेनिंग के बाद डालसा के प्रतिनिधि के रूप में काम करेंगे। नवनियुक्त पीएलवी श्वेता किन्नर व शिवानी किन्नर ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि आज डालसा के साथ जुड़कर वह गौरवान्वित महसूस कर रही है न्यायपालिका ने आज उन्हें इस काबिल समझा और उन्हें सम्मान दिया। उन्होंने कहा कि गरीब और असहाय लोग भी न्याय प्राप्त कर सकें और लोगों के छोटे छोटे झगड़े प्रारम्भिक स्तर पर हीं आपसी बात-चीत, समझौते के साथ सुलझ सके इसके लिए हम सभी पैरा लीगल वालंटियर गाँव-समाज मे जाकर न्याय के लिए प्रयासरत लोगों को त्वरित न्याय दिलवाने, उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाने मे प्रशासन के सहयोग से काम करेंगे।

बारामुड़ी में जमा किया जा रहा था चोरी का कोयला, पांच पर केस

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

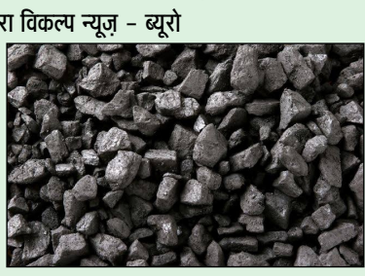

धनबाद। बारामुड़ी खटाल के पास चोरी का कोयला जमा किया जा रहा था। धनबाद थाना की पुलिस ने छापेमारी कर मौके से 71 बोरा पोड़ा कोयला पकड़ा। कोयले का वजन करीब 30 क्विंटल है। इस मामले में बारामुड़ी के मुकेश यादव, श्रवण यादव, अमर यादव, पवन कुमार, आलोक सिंह और धर्मवीर सिंह के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। धनबाद थाना प्रभारी राम नारायण ठाकुर ने बताया कि कोयला जमा करने की सूचना पर पुलिस ने दबिश देकर मौके से एक पिकअप वैन भी पकड़ी है। उस गाड़ी के मालिक और चालक को भी आरोपी बनाया गया है। एक बाइक भी मौके से जब्त की गई है। जिनके खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज की गई है, उनकी तलाश की जा रही है।

विभिन्न भाषा एवं संस्कृति का विशाल देश है भारत- डॉ निलेश कुमार सिंह

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। बलियापुर , आर. एस. पी. कॉलेज, झरिया, (बेलगड़िया) मे %भाषा, संस्कृति और हम - एक क्षेत्रीय उत्सव% कार्यक्रम का आयोजन किया गया, कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ निलेश कुमार सिंह ने की, कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ सिंह ने कहा कि भारत एक विशाल भू - क्षेत्र वाला देश जहाँ विविध धर्म, पहचान एवं संस्कृति के लगभग 1 अरब 30 करोड़ लोग निवास करते है, पाश्चात्य संस्कृति के अतिक्रमण एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से हमारा नाता लगातार कमजोर हो रही है, आज भारत के कई भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर है, हमें यह समझना होगा कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं बल्कि स्वयं एक संस्कृति है, हमें सभी भाषाओं को सम्मान करना चाहिए । कार्यक्रम का संयोजन प्रो. विजय कुमार विश्वकर्मा ने किया, संचालन बीएड प्रशिक्षु ज्योति एवं अपूर्व कुमार पाण्डेय ने की। कार्यक्रम मे प्रो इंचार्ज, प्रो. रमेश सरदार, परीक्षा नियंत्रक प्रो. सुरेश सिंह मुंडा, बीएड विभाग के प्रमुख डॉ उपेंद्र कुमार, डॉ रजनी बारा, डॉ श्याम किशोर प्रसाद, प्रो. एतवा टूटी, डॉ भावना कुमारी, डॉ रामचंद्र कुमार समेत महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के छात्र -छात्राएं उपस्थित थें।

जिलाधिकारी ने किया धान क्रय केंद्रों का औचक निरीक्षण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने मंडी परिसर हरदोई में स्थित धान क्रय केंद्रों का औचक निरीक्षण किया।

जिलाधिकारी ने जिला खाद्य विपणन अधिकारी निहारिका सिंह को निर्देश दिए कि धान क्रय के साथ साथ धान के उठान की भी निर्बाध व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। मिलर्स से समन्वय करते हुए धान को डिपो से मिलो तक पहुंचाया जाये। मंडी सचिव ज्योति चौधरी को निर्देश दिए कि बिजली जाने पर जेनरेटर की बैक अप व्यवस्था रखी जाये ताकि धान खरीद में कोई रूकावट न आये। क्रय केंद्रों पर आने वाले किसानों का पूरा सहयोग किया जाये। उन्होंने मंडी परिसर में आये हुए किसानों से संवाद किया। किसानों ने क्रय केंद्रों की व्यवस्थाओं को लेकर संतुष्टि जाहिर की। जिलाधिकारी ने बताया कि जनपद में धान खरीद की प्रगति अच्छी है। अब उठान पर जोर दिया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान मंडी व विपणन विभाग के सभी सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने किया रैन बसेरों और अलाव का औचक निरीक्षण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। विगत देर रात जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने नगर पालिका हरदोई क्षेत्र के रैन बसेरों व अलाव का औचक निरीक्षण किया। जिलाधिकारी सबसे पहले शचन्द्र बारात घर में बने रैन बसेरे और अलाव का निरीक्षण करने पहुँचे। वहाँ उन्होंने रैन बसेरों की व्यवस्थाओं को देखा। उन्होंने नगर पालिका के सम्बंधित कर्मचारियों को निर्देशित किया कि रैन बसेरा के गेट पर एक बैनर लगवाया जाये जिससे लोगों को इसकी जानकारी हो सके। बेडशीट प्रतिदिन बदली जाये। 15 दिसम्बर के बाद बारातघर के हाल में भी बिस्तर लगवाए जाएं जिससे अधिक लोग यहाँ ठहर सकें। रैन बसेरों में पेयज़ल की उचित व्यवस्था रखी जाये। अलाव की व्यवस्था भी की जाये। इसके उपरांत जिलाधिकारी नगर पालिका परिसर में बने रैन बसेरे को देखने पहुंचे। यहाँ उन्होंने रुके हुए लोगों से बात चीत की। यहाँ उन्होंने निर्देश दिए कि बीमार यात्रियों को तत्काल दवा उपलब्ध करायी जाये। साफ सफाई में किसी भी प्रकार की कोताही न की जाये। यहाँ से निकलकर वह रोडवेज बस अड्डा पहुंचे। यहाँ सो रहे लोगों को उन्होंने स्वयं नगर पालिका में बने रैन बसेरे के बारे में जानकारी दी। इसके बाद बस अड्डे पर सो रहे लोग रैन बसेरे में चले गए। बस अड्डे से बाहर निकलते समय उन्होंने नाले की गन्दगी देखकर कड़ी नाराजगी जताई तथा तत्काल सफाई कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अलाव को उपयुक्त स्थान पर जलाया जाये। रैन बसेरे का केयर टेकर प्रतिदिन रात में बस अड्डे पर सोने वाले लोगों को रैन बसेरे के बारे में बताये। उन्होंने बस अड्डे के कर्मचारियों को भी ध्यान रखने को कहा। एक कर्मचारी रैन बसेरे में जाकर आने वाली बसों के बारे में बताये ताकि यात्री अपनी बस पकड़ सकें। इसके साथ ही उन्होंने नगर पालिका के कर्मचारियों को निर्देश दिए कि रेलवे स्टेशन पर भी रैन बसेरे और अलाव की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। इस अवसर पर नगर मजिस्ट्रेट सुनील कुमार त्रिवेदी व जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार आदि उपस्थित रहे।

विधवा पेंशन के लाभार्थियों का जल्द कराया जाये आधार प्रमाणीकरण: जिलाधिकारी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने आज वर्चुअल माध्यम से विधवा पेंशन के लाभार्थियों के आधार प्रमाणीकरण की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने कहा कि अवशेष आधार प्रमाणीकरण का कार्य जल्द पूर्ण कराया जाये। प्रतिदिन प्रमाणीकरण कार्य की समीक्षा की जाये। इसके साथ ही नये प्राप्त आवेदनों का ससमय सत्यापन कराया जाये। किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब न किया जाये। इस अवसर पर जिला प्रोबेशन अधिकारी भौतिक रूप से कलेक्ट्रेट कक्ष में उपस्थित रहे।

वार्ड वार प्रगणक का गठन कर सर्वे शुरू करने का उपायुक्त ने दिया निर्देश

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। नगर पालिका (आम) निर्वाचन 2024 के निमित्त पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिए जाने की पात्रता निर्धारण के लिए बुधवार को उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा ने संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं संबंधित अंचल अधिकारियों को वार्ड वार प्रगणक का गठन कर सर्वे शुरू करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि धनबाद नगर निगम एवं चिरकुंडा नगर परिषद में अत्यंत पिछड़ा वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के संबंध में वार्ड बार सूचना अद्यतन मतदाता सूची के आधार पर निर्धारित प्रपत्र 1 से 3 में एवं पिछड़े वर्गों की राजनैतिक स्थिति की जानकारी के लिए अनारक्षित वर्ग के विरुद्ध चुने गए अत्यंत पछड़ा वर्ग/पिछड़ा वर्ग के प्रतिनिधियों की सूचना पिछले दो निर्वाचन के आधार पर निर्धारित प्रपत्र 4 से 5 में प्राप्त कर 31 दिसंबर से पहले पूरा करें। उपायुक्त ने कहा कि सभी अंचल अधिकारी शीघ्र वार्ड वार प्रगणक का गठन कर डोर टू डोर सर्वे शुरू कर निर्धारित समय सीमा के अंदर कार्य पूरा करें। बैठक में उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा मिश्रा, नगर आयुक्त रवि राज शर्मा, जिला पंचायती राज पदाधिकारी मुकेश कुमार बाउरी, चिरकुंडा नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी तथा सभी अंचल के अंचल अधिकारी मौजूद थे।

किसान पाठशाला का हुआ आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। जनपद में द मिलियिन फार्मर्स (किसान पाठशाला) 8.0 का आयोजन विकास खण्ड सुरसा के ग्राम फर्दापुर में किया गया। किसान पाठशाला में विनीत कुमार, उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी सदर हरदोई के द्वारा किसान पाठशाला में उपस्थित होकर किसानों को बताया कि किसान भाई गेहूँ की फसल को सुपर सीडर के माध्यम से लाइन से ही बुवाई करे और पहली सिंचाई 21 दिन बाद ही करे। सरसों की फसल में तेल की मात्रा एवं गुणवत्ता में सुधार के लिये सल्फर का प्रयोग अवश्य करे। चना की फसल में खुटाई तथा सरसों की फसल में विरलीकरण कर अपनी फसल का उत्पादन अधिक प्राप्त कर सकते है। फसल में पोषक तत्वों के प्रबन्धन के लिए अपने खेतों में गर्मियों की सीजन में गहरी जुताई, मेढ़बन्दी करे, जिससे वर्षा जल के माध्यम से पोषक तत्व खेत से बहकर बाहर न जाये। किसान भाई अपने खेतो में ढेंचा की हरी खाद, गोबर की खाद का प्रयोग, फसल अवशेष को डिकम्पोजर के माध्यम से सडाकर खेत में खाद बनाकर एवं रासायनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करके अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते है। उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी सदर हरदोई ने किसानों को कृषि विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी। उनके द्वारा अवगत कराया गया कि श्री अन्न (मिलेट्स) की खेती मृदा एवं मानव के स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम है। इसकी खेती में सिंचाई एवं उर्वरक की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है। गौ आधारित खेती के लिए श्री अन्न (मिलेट्स) की फसलों की खेती बहुत ही उपयुक्त है। डा. श्रवण कुमार, सहायक विकास अधिकारी (कृषि) द्वारा आयोजित पाठशाला में उपस्थित होकर प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना एवं किसान क्रेडिट कार्ड योजना एवं पी0एम0कुसुम सोलर पम्प योजना के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। उन्होने यह भी बताया कि जिन किसानों ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अन्तर्गत भूलेख सत्यापन, आधार सीडिंग, एवं ईकेवाई सी नहीं करायी है वह किसान विकासखण्ड के राजकीय कृषि बीज भण्डार पर जाकर या अपने क्षेत्र के कृषि विभाग के कर्मचारी के सहयोग से करा सकते है। उक्त के अतिरिक्त उन्होने किसानो को बताया कि फार्मर रजिस्ट्री के अभियान के तहत प्रत्येक किसान की फार्मर आई डी बनायी जानी आवश्यक है। अत: वह अपने गांव में लगने वाले कैम्प मे अपना आधार कार्ड एवं मोबाइल नम्बर और खतौनी लेकर जाए और कृषि विभाग एवं लेखपाल से मिलकर अपनी आई.डी. बनवा सकते है। किसान भाई स्वयं भी ऐप के माध्यम से या जन सेवा केन्द्र के माध्यम से आई.डी. बनवा सकते है। उपरोक्त किसान पाठशालाओं में ग्राम प्रधान एवं कृषि विभाग के सहायक विकास अधिकारी (कृषि रक्षा), कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, क्षेत्रीय कर्मचारी एवं भारी संख्या में कृषक उपस्थित रहे।

मारवाड़ी समाज, आरोपी की गिरफ्तारी की मांग को लेकर वरिय पुलिस अधीक्षक व उपायुक्त से मिला

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

चिरकुंडा/धनबाद। चिरकुंडा थाना स्थित बिजली आफीस के समीप गत दिनो कुछ लोगों द्वारा गुटका खाकर थुकने के विवाद के मामले में बुधवार को आरोपी की जल्द गिरफ्तारी को लेकर धनबाद जिला मारवाड़ी समाज का एक प्रतिनिधि मंडल जिला के वरिय पुलिस अधीक्षक एवं उपायुक्त से जाकर घटना के संबंध में मिले। पुलिस अधीक्षक व उपायुक्त ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि एक हफ्ते में आरोपियों की गिरफ्तारी कर ली जाएगी और शराबबंदी पर कड़े कदम उठाए जाएगें। मौके पर मिलने वालों में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन धनबाद जिला के अध्यक्ष कृष्ण अग्रवाल,धनबाद नगर निगम के निवर्तमान मेयर चंद्रशेखर अग्रवाल, जितेंद्र अग्रवाल , निरंजन अग्रवाल राजकुमार जिंदल , विकास गढ़याण, आकाश गढ़याण , संदीप जिंदल प्रणब गढ़याण आदि लोग थे।

यातायात और नशा मुक्ति के बारे में बताकर ग्रामीणों को किया जागरूक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

कुरावली/ मैनपुरी। ग्राम पंचायत जखुआ में नशा मुक्ति अभियान और यातायात नियमों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रभारी निरीक्षक धर्मेंद्र सिंह चौहान ने भाग लिया और लोगों को नशा मुक्ति और यातायात नियमों के महत्व के बारे में बताया।कार्यक्रम के दौरान, प्रभारी निरीक्षक ने कहा कि नशा मुक्ति और यातायात नियमों का पालन करना हमारे समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि नशा करने से हमारे स्वास्थ्य और जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, जबकि यातायात नियमों का पालन करने से हम अपने और दूसरों के जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं।इस कार्यक्रम महिला उपनिरीक्षक साक्षी तोमर ने कहा जब पुरुष नशे की लत लगा लेता है तो उसमें अपने बच्चों और अपने घरवालों के प्रति प्रेम कम होता जाता है और नशे की आदत की वजह से वह गलत संगत में बैठने की वजह से गुमराह की राह पर चलने लगता है और इसी गलत संगत की वजह से तमाम अपराधों में लिप्त हो जाता है जिससे उसके घर पर बीवी बच्चे तमाम परेशानियों का सामना करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इसलिए इंसान को नशे की बुरी लत को हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए नशा करने से सेहत और धन दोनों का ही नुकसान होता है। ग्राम पंचायत जखुआ के लोगों ने भाग लिया और नशा मुक्ति और यातायात नियमों के बारे में जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम के अंत में, प्रभारी निरीक्षक धर्मेंद्र सिंह चौहान महिला उप निरीक्षक साक्षी तोमर महिला कांस्टेबल कोमल गुर्जर ग्राम प्रधान लोग उपस्थित रहे। लोगों को नशा मुक्ति और यातायात नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया।

आरटीआई के तहत समय से जानकारी मिलने पर तमाम लोगों की समस्याओं का हुआ समाधान- राज्य सूचना आयुक्त

➢ विकसित भारत में जन-सूचना अधिकार अधिनियम की महत्वपूर्ण भूमिका- डा. दिलीप अग्निहोत्री।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

मैनपुरी। राज्य सूचना आयुक्त डॉ. दिलीप अग्निहोत्री ने करहल के निरीक्षण भवन में तहसील करहल के जन-सूचना अधिकारियों से संवाद करते हुये कहा कि सूचना अधिकार अधिनियम आमजन को शासन के साधनों पर नजर रखने के लिए बेहतर रूप से तैयार किया गया है, यह अधिनियम सरकार को जनता के प्रति और अधिक जवाबदेह बनाता है, यह अधिनियम नागरिकों को सरकार की गतिविधियों के बारे में जागरूक करने की दिशा में एक बड़ा कदम है, सूचना का अधिकार अधिनियम का मूल उद्देश्य नागरिकों को सशक्त बनाना, सरकार की कार्यशैली में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना, भ्रष्टाचार को रोकना तथा लोकतंत्र को सही मायने में लोगों के लिए कार्य करने वाला बनाना है। उन्होने कहा कि आर.टी.आई. के तहत मांगी गयी सूचनाएं यदि लोगों को समय से मिलेंगी तो उनकी समस्याओं का निदान होगा और वह अपना समय अपनी समस्याओं के निदान में नहीं बल्कि अपने परिवार, समाज, प्रदेश, देश के विकास में लगायेंगे, आर.टी.आई. के तहत कोई भी नागरिक, किसी भी सरकारी विभाग से जानकारी प्राप्त कर सकता है, यह अधिकार आम नागरिक के पास है जो सरकार के काम, प्रशासन में भी पारदर्शिता लाने का काम करता है, इस अधिकार का उपयोग किसी भी सरकारी विभाग की राय जानने के लिए नही कर सकते, इसका उपयोग हम तथ्यों की जानकारी पाने के लिए कर सकते है, सरकार की सुरक्षा से सम्बंधित जानकारी या गोपनीय जानकारी इस अधिकार के अंतर्गत नही आती।राज्य सूचना आयुक्त केंद्रीय सूचना आयोग द्वारा आयोजित सम्मेलन में सहभागिता के बाद करहल पहुंचे जहां उन्होने तहसील के जन-सूचना अधिकारियों से वार्ता करते हुये कहा कि सम्मेलन में विकसित भारत में आर.टी.आई का योगदान विषय पर विचार विमर्श किया गया। उन्होने कहा कि उ.प्र. देश का सबसे बड़ा प्रदेश है, इसलिए देश के विकास में उसका योगदान भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, सूचना का अधिकार लोक कल्याण में सहायक है, एस.डी.जी. इण्डिया इण्डेक्स की रिपोर्ट के अनुसार उ.प्र. फ्रण्ट रनर कैटेगरी में सम्मिलित हो गया है, विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक प्रदेश की करीब 400 बेस्ट प्रैक्टिसेस वर्तमान में नीति आयोग के 'नीति फॉर स्टेट्स पोर्टल' पर अपलोड हैं, राज्य सूचना आयोग द्वारा ऑनलाइन आवेदन, सुनवाई पर फोकस किया गया है, इसमें उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। इस दौरान उप जिलाधिकारी नीरज द्विवेदी, क्षेत्राधिकारी करहल संतोष कुमार, तहसीलदार करहल आनन्द कुमार, खंड विकास अधिकारी बरनाहल राजेश मिश्रा सहित अन्य जन सूचना अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

गीता जीवन जीने की कला सिखाती है: प्रो. ए. के.सोनकर

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ । गीता जीवन जीने की कला सिखाती है। यह सभी ग्रंथों का सार है। यह बात लखनऊ विश्वविद्यालय में फैकल्टी ऑफ योग एंड अल्टरनेटिव मेडिसिन के योग विभाग द्वारा गीता जयंती के आयोजन पर फैकल्टी के डीन प्रो.अशोक कुमार सोनकर ने कही। इससे पूर्व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। डॉ. इशिता अरोड़ा ने कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी को जीवन में सफल होने के लिए स्वधर्म को अपनाना चाहिए। ताकि उनकी जीवन के प्रति प्रसन्नता और सार्थकता बनी रहे। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम हुए। जिसमें गीता के विषय में फैकल्टी के छात्र छत्राओ श्वेता, प्रिया, इतिका, ज्योति, सुधा, रुचि, उर्वशी एवं नम्रता मिश्रा ने सभी को संबोधित किया। इसके अलावा छात्रा निकिता, अवनी एवं रागनी ने योग नृत्य प्रस्तुत किया। रोम हेमवानी ने बांसुरी बजा कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान गीता से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

बहुत दुख की बात है कि केंद्र सरकार को अपने मित्रों की पड़ी है पर किसानों की कोई परवाह नहीं है- लोकदल

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी सुनील सिंह जी ने किसानों पर हो रहे अत्याचार पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि किसानो पर हो रहे अत्याचार को देख कर दिल दुखता है। यह देश जहां किसानों का सम्मान होता था तो आज उन्हें लाठी, डंडों , आसू गैस, कटीले तारो,और बंदूक की गोलियों का अपने हक के लड़ाई के लिए सामना करना पड़ रहा है। यह देश अन्नदाता का कहा जाता था लेकिन आज सरकार किसानों पर सबसे ज्यादा जुल्म कर रही है।एक समय में किसान पर कोई बात आ जाये तो सरकारे इधर से उधर हो जाती थी, पर आज ऐसी तानाशाह सरकार है कि पिछले आंदोलन में 700 किसानों की जान गई। सरकार ने किसानों से वादा किया पर वादा पूरा नहीं किया। पुनः सरकार जिस हिसाब से गोलियाँ चला रही है, आंसू गैस छोड़ रही है, काँटे, कीले, बैरिकेड लगा रही है, इससे साफ़ है की सरकार को किसान की जान की कोई परवाह नहीं है। बहुत दुख की बात है कि सरकार को अपने मित्रों की पड़ी है पर किसानों की कोई परवाह नहीं है। लोकदल की मांग किसानों की मांग।

विराज फिल्म्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले एक साथ तीन हिंदी वेब सीरीज की शूटिंग सम्पन्न

➪ उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड़ में की गई है तीनों फिल्मों की शूटिंग

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। विराज फिल्म्स एंड एंटरटेनमेंट के बैनर तली बन रही तीन हिंदी वेब सीरीज ''आरजू एक प्रेम कहानी'', ''एक प्यार ऐसा भी'' एवं ''उसकी नथ'' की शूटिंग सम्पन्न हो गई है। इसकी जानकारी देते हुए निर्माता एवं अभिनेता विजय गुप्ता ने बताया कि जल्द ही तीनों फिल्मों का आनंद दर्षक ले सकेंगे। विजय गुप्ता ने बताया कि फिल्म इंडस्ट्री में इस समय वेब सीरीज का दौर चरम पर है इसीलिए अब नामी निर्माता और अभिनेता भी वेब सीरीज़ बनाने का कार्य बखूबी कर रहे हैं। बता दें कि तीनों वेब सीरीज में फिल्म के निर्माता-निर्देशक विजय गुप्ता स्वयं अभिनेता भी हैं। विजय गुप्ता ने तीनों वेब सीरीज का निर्माण अपने ही विराज फिल्मस एंड एंटरटेनमेंट के बैनर तले की है। इसके पूर्व भी अपने होम प्रोडक्शन में बनी फिल्म बब्बर में अरविंद अकेला (कल्लू) के साथ में विजय गुप्ता बड़े पर्दे पर नजर आ चुके हैं। इन तीनों हिंदी वेब सीरीज के डायलॉग, संवाद एवं स्क्रीनप्ले अरविंद यादव ने लिखा है और निर्माता विजय गुप्ता ने कहानी को आयाम दिया है। ''आरजू एक प्रेम के कहानी'' का निर्देशन बिट्टू सिंह एवं ''एक प्यार ऐसा भी'' तथा ''उसकी नथ'' की शूटिंग मनोज खड़े के निर्देशन में की गई है। इस वेब सीरीज की शूटिंग लखनऊ एवं उत्तराखण्ड़ में की गई है। विजय गुप्ता ने बताया कि तीनो हिंदी वेब सीरीज की कहानी बहुत ही उम्दा है। ''आरजू एक प्रेम कहानी'' आज के युवाओं को प्रेरणा देने वाला है जबकि ''एक प्यार ऐसा भी'' की कहानी नौजवानों के लिए एक सबक है। जबकि ''उसकी एक नथ'' की कहानी बिल्कुल अलग है। फिल्म में अभिनेता विजय कुमार गुप्ता के अलावा प्रीति कनौजिया, विनी वरुण, निक्की गोस्वामी, आकांक्षा, सुधांशु, विशाल, उत्कर्ष बाजपेई, विकास त्रिवेदी, अभिषेक यादव, अनुपम सिंह ने अभिनय किया है जबकि प्रोडक्शन मैनेजर पंकज कनौजिया हैं।

बिजली की लाइन से ट्रांसफार्मर से क्वायल चोरी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बिजनौर क्षेत्र में बेखौफ चोरों ने चलती विद्युत लाइन का विद्युत ट्रांसफार्मर नीचे गिरा कर उसके कीमती क्वायल चोरी कर लिए। जानकारी होने पर विद्युत अधिकारियों ने बिजनौर थाने में इसकी तहरीर दी है। बिजनौर उपखंड अधिकारी अजय यादव के मुताबिक जैती खेड़ा फीडर से जुड़ी विद्युत लाइन में राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) मुख्यालय के पास नए निर्माणाधीन बिजनौर पावर हाउस के सामने 250 केवीए का विद्युत ट्रांसफार्मर लगा है। इससे यहां पर नव विकसित कॉलोनी में विद्युत सप्लाई होती है। लेकिन सोमवार रात चोरों ने विद्युत लाइन चालू होने के बाद भी उक्त ट्रांसफार्मर को खंभे से नीचे गिरा दिया और उसके अंदर के कीमती क्वायल चोरी कर लिए। मंगलवार देर हम जानकारी होने पर विद्युत अधिकारियों ने वहां पहुंचकर मौका मुआयना किया। एसडीओ ने बताया कि इस मामले को लेकर संबंधित अवर अभियंता द्वारा बिजनौर थाने में तहरीर दे दी गई है। बिजनौर थाना प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार राणा का कहना है कि उन्हें अभी इसकी कोई जानकारी नहीं है। लेकिन अगर तहरीर मिली तो रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

हुसैनाबाद में नगर निगम का अतिक्रमण विरोधी अभियान

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बुधवार को हेरिटेज जोन में अतिक्रमण हटाओ अभियान, 20 ठेले और 15 अस्थाई दुकानें हटाई गईं,बुधवार को वार्ड हुसैनाबाद के हेरिटेज जोन में अधोहस्ताक्षरी के नेतृत्व में घंटाघर तालाब से रूमी गेट पुलिस चौकी और वार्ड चौक, आचार्य नरेंद्र देव में कोणेश्वर चौराहे से दूध मंडी तक अवैध अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान,20 ठेले,15 अस्थाई दुकानें,6 कार टायर,13 मोटरसाइकिल टायर,1 टाली,1 लोहे की बेंच अतिक्रमण के दौरान उपयोग में लाए गए सभी सामान को जब्त कर लिया गया। वही नगर निगम ने अतिक्रमणकारियों को सख्त चेतावनी दी गई कि भविष्य में अतिक्रमण न किया जाए। अतिक्रमण दोबारा न हो, इसके लिए क्षेत्रीय थानाध्यक्ष को पत्र प्रेषित किया गया। यह कार्रवाई जोनल अधिकारी मनोज यादव, धर्मदेव, और 296 टीम की उपस्थिति में की गई। यह अतिक्रमण अभियान पिछले 10 दिन से चलाया जा रहा है। हेरिटेज जोन को स्वच्छ और व्यवस्थित बनाए रखने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया गया। स्थानीय प्रशासन ने भविष्य में इस तरह की गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए सतर्कता बढ़ाने का आश्वासन दिया है।

समाचार

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मानवाधिकार परिवार के लिए भवन स्वीकृत कराने के लिए सांसद डॉ. अशोक वाजपेई एवं एमएलसी मुकेश शर्मा से की मांग

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर भारतीय मानवाधिकार परिवार के स्थापना वर्ष की 25 वीं वर्षगांठ पर आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरीश अवस्थी ने राज्य सभा सांसद डॉ. अशोक वाजपेई एवं विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा से किसी भी विभाग की स्वीकृति से संगठन के लिए एक भवन आवंटित कराने की मांग की, इसके लिए संगठन किराया देने को भी तैयार है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि संगठन का विस्तार अब 24 राज्यों में हो चुका है। विभिन्न राज्यों एवं प्रदेश के विभिन्न जनपदों से पदाधिकारी एवं अपनी समस्याओं को लेकर फरियादी यहां आते रहते हैं 7 संगठन का विस्तार हो जाने के कारण अब निशातगंज के करामत मार्केट में स्थित संगठन के राष्ट्रीय कार्यालय में समुचित स्थान नही रह पाता है। कार्यालय में हो रही इस समस्या के मद्देनजर अवस्थी ने शासन के दोनों प्रतिनिधियों से संगठन के लिए भवन आवंटित कराने की मांग की।

संदिग्ध परिस्थितियों में किशोरी लापता,युवक पर भगा ले जाने की रिपोर्ट दर्ज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बिजनौर इलाके से एक 16 वर्षीय किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गईद्य किशोरी की मां ने क्षेत्र के ही परवर पूरब स्थित सौसीर खेड़ा निवासी युवक संजीत के खिलाफ किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। महिला का कहना है कि उसकी बेटी घर में रखे गहने और लाखों रुपए की नगदी व एक मोबाइल भी अपने साथ ले गई है। पीड़ित महिला का कहना है कि सोमवार रात संजीत उसे कहीं लेकर चला गया। इसकी जानकारी मंगलवार सुबह तब हुई जब बेटी घर पर नहीं मिली। महिला के मुताबिक सोमवार शाम करीब 6 बजे बेटी को संजीत से फोन पर बात करते हुए पाया गया था तो महिला ने अपनी बेटी को डांट फटकार कर समझाया। लेकिन संजीत रात में किशोरी को कहीं बहला फुसला कर अपने साथ भगा ले गया। घर में जानकारी की गई तो पता चला कि दोनों मिलकर बड़ी बेटी और बहू के करीब 1 किलो चांदी व 2 तोला सोने के गहने और एक मोबाइल के अलावा घर में रखे 2 लाख रुपए कैश भी अपने से ले गए हैं। फिलहाल पीड़ित महिला की तहरीर पर बिजनौर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी और किशोरी की तलाश में जुट गई है।

नवीनीकरण के साथ मार्जिन बढ़ाए जाने की मांग को लेकर आबकारी आयुक्त से मिले शराब विक्रेता वैलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारी, सौंपा ज्ञापन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। शराब विक्रेता वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने बुधवार को आबकारी आयुक्त से उनके कार्यालय में मुलाकात की। मुलाकात के दौरान पदाधिकारियों ने अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। एसोसिएशन के अध्यक्ष सरदार एसपी सिंह ने आयुक्त से नवीनीकरण के साथ मार्जिन बढ़ाए जाने की मांग की। उन्होंने आयुक्त को बताया कि पिछले कई वर्षों से व्यापार में मार्जिन काम होता चला जा रहा है जिसकी वजह से व्यापार में नुकसान हो रहा है। वहीं नीरज जायसवाल और विकास मोहन श्रीवास्तव ने अंग्रेजी व बीयर में कोटा प्रणाली को और आसान बनाने मांग की। शिवकुमार जायसवाल व जयप्रकाश जयसवाल ने लगातार बढ़ते जा रहे कोटे को लेकर चर्चा की। रमेश जायसवाल व पंकज जायसवाल ने स्कैनिंग मशीन की समस्या को लेकर के अवगत कराया। मीडिया प्रभारी देवेश जायसवाल ने बताया प्रमुख सचिव आबकारी से मुलाकात सफल रही और आगे जरूरत पड़ने पर उनके समक्ष मांग और उनसे मुलाकात करते रहेंगे।

स्त्री के संघर्ष की प्रेरक दास्तान है द रैबिट हाउस

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। समाज के नियमों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के मुद्दों को उजागर करती फिल्म 卐द रैबिट हाउस卐 आगामी 20 दिसंबर को अखिल भारतीय स्तर पर रिलीज होने जा रही है। इस बात की जानकारी फिल्म के निर्माता कृष्णा पांधरे और सुनीता पांधरे ने आज यूपी प्रेस क्लब में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। फिल्म की कहानी एक नवविवाहित महिला के संघर्ष पर आधारित है, जो अपने पति के साथ विपरीत परिस्थितियों में शादीशुदा जीवन जीते हुए समाज के नियमों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती है। शूटिंग लोकेशन- हिमाचल प्रदेश की खूबसूरत वादियां,गीताई प्रोडक्शन,निर्देशक व एडिटर- वैभव कुलकर्णी,डीओपी- प्रतीक पाठक,संगीतकार- पद्मनाभ गायकवाड़,मुख्य कलाकार-अमित रियान,करिश्मा,पद्मनाभ गायकवाड़,गगन प्रदीप,प्रीति शर्मा,सुरेश कुम्भार सुनीता पांधरे ने बताया कि यह फिल्म स्त्री के संघर्ष और उसके आत्मनिर्णय की कहानी को खूबसूरती से प्रस्तुत करती है। यह समाज में महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता के मुद्दों को एक नए दृष्टिकोण से पेश करती है। फिल्म के निर्देशक वैभव कुलकर्णी ने अपनी रचनात्मकता से इसे एक प्रभावशाली सिनेमाई अनुभव बनाने का प्रयास किया है। 卐द रैबिट हाउस卐 दर्शकों को प्रेरित करने और उन्हें सोचने पर मजबूर करने का वादा करती है।

हत्या की घटना का हुआ खुलासा, दो शातिर अपराधी गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। थाना नगराम क्षेत्र के ग्राम करसण्डा में महिला प्रेमा की हत्या के मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए घटना का सफल अनावरण किया और इसमें शामिल दो अभियुक्तों, आकाश कुमार और सुलेमान हुसैन को गिरफ्तार कर लिया। पूरा मामला 6 दिसंबर की रात का है जहां मृतका प्रेमा खेत की रखवाली के लिए गई थीं। इसी दौरान आकाश कुमार और सुलेमान हुसैन ने वहां पहुंचकर शराब के लिए पैसे मांगे। पैसे न मिलने पर मफलर से गला दबाकर उनकी हत्या कर दी। हत्या को लूट का रूप देने के लिए अभियुक्तों ने मृतका के गहने (अंगूठी, माला, पायल) और मोबाइल फोन छीन लिया और शव को खेत से 50 मीटर दूर नाले में छिपा दिया। हत्या की सूचना मिलते ही थाना नगराम पुलिस और उच्च अधिकारियों ने मौके का निरीक्षण किया। मृतका के बेटे दिलीप कुमार ने पिता, भाई, चाचा व अन्य पर हत्या का शक जताते हुए शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामले की जांच के लिए तीन टीमें गठित कीं, जिनमें सर्विलांस सेल और थाना नगराम की संयुक्त टीम भी शामिल थी। मैनुअल और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर जांच करते हुए अभियुक्तों को हिरासत में लिया गया।अभियुक्त आकाश कुमार ने पूछताछ में बताया कि वह शराब पीने का आदी था और अपनी मां से पैसे मांगता था। पत्नी के मायके जाने और वापस न लौटने की वजह से वह मानसिक तनाव में था। उसने बताया हत्या के बाद उसने पुलिस को गुमराह करने के लिए गहने चुराए और शव को नाले में छिपा दिया। इतना ही नहीं, आकाश मृतका के अंतिम संस्कार में भी शामिल हुआ था। वहीं पुलिस ने अभियुक्तों के पास से मृतका के गहने (अंगूठी, माला, पायल) एक मोबाइल फोन बरामद किया।अभियुक्तों के खिलाफ साक्ष्यों के आधार पर विधिक कार्यवाही करते हुए उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। पुलिस की इस त्वरित और प्रभावी कार्रवाई से क्षेत्र के लोगों में कानून-व्यवस्था को लेकर विश्वास बढ़ा है। लखनऊ पुलिस के प्रयासों की सराहना की जा रही है।

आज के समय में हिन्दी भाषा के समायोजन की आवश्यकता है: कुलपति

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ । आज के समय में हिन्दी भाषा के समायोजन की आवश्यकता है। क्योंकि भाषा संस्कृति और सभ्यता के संरक्षण, आम जनमानस के भाव एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिए आवश्यक है। यह बात बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विवि में भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत हिन्दी विभाग की तरफ से आयोजित संगोष्ठी में कुलपति प्रो. एस.के. द्विवेदी ने कही। संगोष्ठी का विषय था भारतीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पीएसी की अपर पुलिस अधीक्षक डॉ. अर्चना सिंह ने कहा कि भाषा संवाद के लिये आवश्यक है। हमें अपनी मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं के पुनर्जागरण के लिए हरसंभव प्रयास करने चाहिए। क्योंकि किसी भी भाषा के लुप्त होने पर भाषा के साथ-साथ वर्षों की परंपरायें, संस्कृति, रीति रिवाज एवं उस भाषा से संबंधित ज्ञान भी लुप्त हो जाता है। लविवि के संस्कृत विभाग के डॉ. सत्यकेत ने कहा कि भारतीय भाषाओं ने प्राचीन काल से ही आपस में समन्वय स्थापित किया हुआ है। डॉ. विपिन झा ने कहा कि संस्कृत भाषा सभी भाषाओं का केन्द्र बिंदु हैं। इसके अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने के लिए मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा का ज्ञान भी जरूरी है। इसीलिए संस्कृत भाषा अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए हिन्दी एवं अन्य मातृभाषा ज्ञानार्जन के लिए एवं आंग्ल भाषा वैश्विक स्तर पर अपनी बात रखने के लिए आवश्यक है।

भारतीय मानवाधिकार परिवार का वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ सम्पन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर भारतीय मानवाधिकार परिवार द्वारा केसरबाग स्थित गांधी भवन में वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया गया। राज्य सभा सांसद डॉ. अशोक वाजपेई, विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा, वृन्दावन धाम से राधे राधे एवं संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरीश अवस्थी ने. दीप प्रज्जवलित कर अधिवेशन का आगाज किया। इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा ने अपने सम्बोधन में सभी को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस की बधाई देते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर भारत के बारे में बताते हुए हुए कहा कि आज से 10 साल पहले 25 प्रतिशत मोबाइल मेक इन इंडिया होते थे लेकिन अब 2024 में 99 प्रतिशत मोबाइल मेक इन इंडिया होते हैं।टेक्नोलॉजी एवं रक्षा के क्षेत्र में भारत ने पूरे विश्व में अपना लोहा मनवा दिया है।रक्षा के क्षेत्र में 2014 से पूर्व भारत में सिर्फ 600 करोड़ के रक्षा उत्पाद का एक्सपोर्ट होता था लेकिन 10 वर्षों में अब यह एक्सपोर्ट 23 हजार करोड़ हो गया है, और आने वाले 3 -4 वर्षों में भारत रक्षा क्षेत्र में 50 हजार करोड़ का एक्सपोर्ट करेगा।भारत अब आत्म निर्भर भारत की ओर बढ़ रहा है। उन्होने कहा कि भारत की इस बढ़ती हुई ताकत में आप सभी का योगदान है।आज विश्व भारत की ओर देख रहा है, भारत विश्व का नेतृत्व करेगा। मुकेश शर्मा ने भारतीय मानवाधिकार परिवार द्वारा जनसेवा के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की सराहना की। राज्य सभा सांसद डॉ. अशोक वाजपेई ने कहा कि भारतीय मानवाधिकार परिवार के स्थापना सम्मेलन में गुजरात, उत्तराखंड,मध्य प्रदेश, बिहार सहित कई राज्यों की सहभागिता है। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरीश अवस्थी ने पूरे देश में युवाओं को जोड़ने का कार्य किया है7 यह परिवार सामाजिक क्षेत्र में बड़ा विजन बन चुका है 7उनके प्रयासों से छोटा सा पौधा वट वृक्ष बन चुका है 7 बड़े पैमाने पर लोग मानवाधिकार से जुड़ चुके हैं।जरुरत मदों की सेवा करने, सुरक्षा की भावना पैदा करने एवं लोगों के दुख दर्द बांटने के क्षेत्र में सीमित संसाधनों के बावजूद यह संगठन सराहनीय कार्य कर रहा है।इसके लिए गिरीश अवस्थी जी एवं विभिन्न राज्यों में उनकी टीम एवं पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। उन्होने विश्वास व्यक्त किया कि यह संगठन निरंतर आगे बढ़ता रहेगा एवं समाज की सेवा के लिए तत्पर रहेगा। विधान परिषद सदस्य पवन सिंह ने कहा मानव को मानव का अधिकार दिलाना कठिन होता है। जरूरत मंद एवं पीड़ित की मदद करना सर्वोत्तम सेवा है, इस क्षेत्र में भारतीय मानवाधिकार परिवार द्वारा निरन्तर किये जा रहे सेवा कार्य सराहनीय हैं। ईसाई धर्मगुरु डीपी थापा ने कहा कि आज प्रभु येसु के प्रेम व दया के सन्देश पर अमल करने की जरुरत है। उन्होने कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेम की भाषा को जाग्रत करना होगा, अगर हम एक दूसरे से प्रेम करने लग जाये तो मानव अधिकारों का हनन नही होगा। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरीश अवस्थी ने संगठन के विस्तार एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वर्तमान में यह संगठन 24 राज्यों में जनसेवा कार्यों में लगा है जिसके लिए हमारे सभी पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। इनके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश महिला आयोग की उपाध्यक्ष अर्पणा यादव, ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर अंजनी मिश्रा, संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष दीपक उमराव,सीमा शुक्ला, वृंदावन धाम से राधे - राधे, राधा किशोरी, श्यामा किशोरी,, अजय त्रिपाठी, मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति के सचिव एवं वरिष्ठ पत्रकार भारत सिंह, संघ प्रचारक नवल किशोर, सीतापुर महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष मोनिका आनंद, नमित पार्षद स. सरबजीत सिंह, नज़हत नूर इत्यादि ने अपने विचारों से मानवाधिकार विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए संगठन द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे सामाजिक कार्यों की सराहना की।संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरीश अवस्थी, वरिष्ठ पदाधिकारी विभा पाण्डेय, लता अवस्थी, हेमा डोबरियाल, अमित शर्मा, इरफानउल्ला खां, अभिषेक सक्सेना, सतीश गुप्ता, राजेश शर्मा, शिव कैलाश तिवारी इत्यादि ने अतिथियों का पुष्प माला पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया एवं उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वाले संगठन के पदाधिकारियों एवं अन्य राज्यों से अधिवेशन में शामिल हुए पदाधिकारियों को सम्मानित किया। इंद्रनाथ भट्टाचार्य के संचालन में सम्पन्न हुए कार्यक्रम में अधिवेशन संयोजक गिरीश अवस्थी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संपादकीय

बुढ़ापे को बुलावा

यह मौजूदा वक्त की विडंबना है कि आय बढ़ने के साथ लोगों ने घर में बने खाने की बजाय डिब्बाबंद प्रसंस्कृत खाने को तरजीह देना शुरू कर दिया है। सूचना माध्यमों के जरिये तुरत-फुरत के खाने के विज्ञापनों का इतने आक्रामक ढंग से प्रचार किया जाता है कि बच्चे क्या, बड़े भी डिब्बाबंद खाने के मुरीद होने लगते हैं। यह जानते हुए कि यह उनकी सेहत पर भारी है। जब घर के बड़े-बुजुर्ग इससे बचाव की सलाह देते हैं तो वे इसे पुरातनपंथी सोच करार दे देते हैं। लेकिन डिब्बाबंद खाने की मुहिम चलाने वाले पश्चिमी देशों को भी अब अहसास हो चला है कि डिब्बाबंद खाने से समय से पहले बुढ़ापा दस्तक देने लगता है। खानपान की पश्चिमी संस्कृति के वाहक इटली में हुए एक शोध ने विकसित देशों को भी नींद से जगाया है। दरअसल, इटली के इंस्टीट्यूट ऑफन्यूरोलॉजी के एक हालिया शोध ने फिक्र बढ़ाने वाला निष्कर्ष दिया है कि डिब्बाबंद भोजन के जरूरत से ज्यादा सेवन से व्यक्ति का शरीर समय से पहले बूढ़ा हो जाता है। वैज्ञानिकों ने बताया है कि इसके सेवन से हमारे शरीर की कोशिकाएं और ऊतक समय से पहले वृद्ध होने लगते हैं। यदि कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करता है तो बुढ़ापा जल्दी आएगा। इस शोध में करीब साढ़े बाइस हजार लोगों को शामिल किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि अधिक मात्रा में जंक फूड व प्रसंस्कृत भोजन का उपभोग करने वाले लोगों की जैविक उम्र अधिक दर्ज की गई। वैज्ञानिकों का दावा है कि हमारे खाने में शामिल प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ के मुक्त कण अन्य स्वस्थ अणुओं के विरुद्ध प्रतिक्रिया देते हैं। चिंता की बात यह है कि ये न केवल डीएनए व आरएनए बल्कि प्रोटीन को भी नुकसान पहुंचाते हैं। जिससे समय से पहले ही शरीर की कोशिकाएं मरने लगती हैं। अंततरू शरीर समय से पहले बूढ़ा होने लगता है। वहीं आशंका जतायी जा रही है कि रासायनिक पदार्थों द्वारा संरक्षित डिब्बाबंद खाना हमारे शरीर में सूजन भी पैदा कर सकता है। इतना ही नहीं कालांतर व्यक्ति मोटापा, हृदय रोग, दूसरी श्रेणी के मधुमेह व गठिया जैसे रोगों का भी शिकार हो सकता है। दरअसल, खाद्य पदार्थों का बाजार चलाने वाली कंपनियों की कोशिश होती है कि खाने को देर तक संरक्षित किया जाए। खाद्यान्न को प्रसंस्कृत करने के लिये सुरक्षित रखने वाले रासायनिक पदार्थों व सोडियम का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा अधिक मात्रा में चीनी तथा शरीर के लिये नुकसानदायक रसायन, वसा व कार्बोहाइड्रेट भी खाने को देर तक चलने लायक बनाने के लिये इस्तेमाल किए जाते हैं। जो आखिरकार हमारी सेहत से खिलवाड़ ही करते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ कंपनियां अधिक मात्रा में स्टार्च का भी प्रयोग करती हैं। ये कालांतर शरीर में शूगर बढ़ने से मधुमेह का खतरा पैदा कर सकती हैं। अधिक तेल भी सेहत के लिये घातक होता है। सेहत वैज्ञानिक लंबे अरसे से कहते रहे हैं कि डिब्बाबंद खाना व जंकफूड शरीर में मोटापा बढ़ाता है। दरअसल, इसमें विद्यमान ट्रांस फैट कालांतर शरीर में कोलेस्ट्रॉल को बढ़ा देता है। इससे बाद में कई तरह के रोग पैदा हो जाते हैं। विशेषकर दिल के रोगों के लिये यह घातक साबित हो सकता है। एक अध्ययन बताता है कि हाल के वर्षों में भारतीयों के खाने में डिब्बाबंद भोजन का हिस्सा बढ़ा है। एक भारतीय रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि नई पीढ़ी घरों में खाना बनाने के बजाय डिब्बाबंद खाने को तरजीह दे रही है। जो कालांतर गैर संक्रामक रोगों को ही बढ़ावा देता है। विडंबना यह कि मां-बाप के मना करने के बावजूद नई पीढ़ी के किशोर व बच्चे डिब्बाबंद खाने और फास्ट फूड को अपना मुख्य भोजन बना रहे हैं। यही वजह है कि बड़ी उम्र में होने वाले लाइफस्टाइल के रोग अब बच्चों व किशोरों में भी होने लगे हैं। निश्चित ही इटली में हुआ शोध हमारी आंख खोलने वाला होना चाहिए। लोगों को डिब्बाबंद भोजन से परहेज करने के लिये जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है।

जॉर्ज सोरोस भारत-विरोधी

संसद के दोनों सदनों में हंगामे, नारेबाजी की एक त्रिकोणीय स्थिति है। त्रिकोण के एक सिरे पर भाजपा, संभल, जॉर्ज सोरोस हैं। दूसरे सिरे पर अडाणी समूह और सोनिया-राहुल गांधी हैं। तीसरे सिरे पर राज्यसभा के सभापति एवं उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खिलाफ विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव की कवायद है। कोई भी कोण समझौते और सदन की कार्यवाही के सुचारू संचालन के पक्ष में नहीं लगता। संसद अखाड़ा बनकर रह गई है। जॉर्ज सोरोस के परोक्ष हस्तक्षेप और भारत-विरोधी सोच और ऐसे ही संगठनों को आर्थिक मदद आदि देने का मुद्दा कुछ अधिक संवेदनशील और कूटनीतिक है। संभल, उप्र की सांप्रदायिक हिंसा पर सपा संसदीय बहस की पक्षधर है, तो कांग्रेस 'अडाणी, अडाणी' के अलावा किसी और मुद्दे पर संसदीय दखल के मूड में नहीं है। कांग्रेस को लगता है कि इसी मुद्दे पर जनादेश मिल सकता है, हालांकि पार्टी बार-बार नाकाम रही है। अडाणी समूह भारत के सर्वोच्च औद्योगिक समूहों में एक है। उस पर लगातार प्रहार करना और उसे अपमानित करने का एजेंडा चलाना देशहित में नहीं है। लोकतंत्र के मायने वाचालता नहीं हैं। कांग्रेस की राज्य सरकारों ने हजारों करोड़ रुपए के ठेके अडाणी समूह को दिए हैं और आज भी ऐसे ठेके कर्नाटक, तेलंगाना की कांग्रेस सरकारों में जारी हैं। अडाणी समूह की काट के लिए एक पुराना मुद्दा, संसद में भी, गूंज रहा है। जॉर्ज सोरोस और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी इसमें एक ही सिक्के के दो पहलू लगते हैं। हंगरी में जन्मे सोरोस अमरीका के उम्रदराज उद्योगपति हैं। वह 600 अरब रुपए के बाजार-मूल्य के उद्योगपति हैं। उन्होंने विश्व भर में करीब 90,000 करोड़ रुपए के दान विभिन्न संगठनों को दिए हैं। सोरोस की मदद से ही 30 देशों के 150 खोजी पत्रकारों का एक संगठन बना-ओसीसीआरपी। इस संगठन के सौजन्य से अमरीकी प्रवास के दौरान कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की उस प्रेस-वार्ता का आयोजन किया गया था, जिसकी विषय-वस्तु अडाणी समूह और प्रधानमंत्री मोदी के ही इर्द-गिर्द थी। प्रधानमंत्री मोदी को कई मौकों पर ओसीसीआरपी ने 'अलोकतांत्रिक नेता' करार दिया। इस संगठन के जरिए जम्मू-कश्मीर में 'फोरम ऑफ डेमोक्रेटिक लीडर्स फाउंडेशन' बनाया गया था। सोरोस मोदी-विरोध के इस चक्रव्यूह का बुनियादी दानदाता रहा है। ओसीसीआरपी और फोरम ने जम्मू-कश्मीर को 'अलग देश' माना था और प्रचारित कर उसकी व्याख्या भी की थी। आपत्तिजनक मुद्दा यह है कि 1997 में सोनिया गांधी जम्मू-कश्मीर वाले संगठन की सह-अध्यक्ष थीं। वह भारत-विरोधी प्रचार और सोच के संगठन में पदाधिकारी थीं, लिहाजा देशविरोधी गतिविधियों में संलिप्त थीं। बहरहाल हम अडाणी समूह के खिलाफ दुष्प्रचार में सोरोस की वित्तीय और अन्य भूमिकाओं को एक तरफ रखते हैं, क्योंकि यह व्यक्तिगत औद्योगिक खुन्नस का मामला भी हो सकता है। यदि सोरोस भारत-विरोधी गैर-सरकारी संगठनों को, अलग-अलग कार्यों के लिए, पैसा मुहैया कराता रहा है, तो आज तक उसकी अनुमति किन आधारों पर दी जाती रही? क्या भारत सरकार के गृह और वित्त मंत्रालयों को जानकारी नहीं रही कि सोरोस किस मकसद से कुछ संगठनों को वित्त-पोषित करता रहा है? क्या सोरोस और भारत के गांधी परिवार के बीच कोई सांठगांठ, मिलीभगत है, बेशक वह प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ रही हो? यदि किसी भारत-विरोधी अभियान, सर्वेक्षण, दुष्प्रचार में सोनिया गांधी की सवालिया, संदिग्ध भूमिका रही है, तो मौजू सवाल यह है कि 1997 के संदर्भ की याद 2024 में ही क्यों आई? क्या वह संदर्भ आज भी प्रासंगिक है? यदि वाकई ऐसा है, तो सोनिया गांधी के खिलाफ देशविरोध का केस दर्ज किया जाए। कुछ विषय जांच के हैं। संसद में कोहराम 'देशविरोध' का ही काम है।

संसद को अप्रासंगिक बनाने धनखड़ और बिरला में होड़

डॉ. दीपक पाचपोर

> संसद में काम न होने का फायदा हमेशा सत्तारुढ़ दल को होता है। बिरला व धनखड़ मिलकर भारतीय जनता पार्टी को दिलो-जान से लाभान्वित कर रहे हैं

अपने प्रदीर्घ राजनीतिक जीवन के अलग-अलग कालखंडों में विधानसभा से लेकर संसद के दोनों सदनों में बैठ चुके राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह सोमवार को जब संसद परिसर में यह कहते हैं कि श्मैंने अपने लम्बे राजनीतिक जीवन में ऐसा पक्षपाती सभापति नहीं देखा जैसा कि आज आसीन है, तो इस पर गम्भीरता से विचार किये जाने की जरूरत है। उसे केवल यह कहकर खारिज नहीं किया जाना चाहिये कि वे विपक्ष में हैं तो ऐसा कहेंगे ही। उन्होंने यह बात शिष्टाचारवश राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ को ही लेकर सीमित करके कही है क्योंकि वे उसी सदन के बारे में कह रहे थे, जिसके कि वे सदस्य हैं। वरना उनकी बात दोनों ही सदनों के बारे में एक सी लागू होती है- लोकसभा के बारे में भी जिसके अध्यक्ष ओम बिरला हैं। हालांकि अब यह कहना बड़ा मुश्किल है कि भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में कौन अधिक सक्रियता और शिद्दत से संसद को अप्रासंगिक बनाने पर तुला है- ओम बिरला या जगदीप धनखड़। वैसे तो बिरला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की परम्परा से आते हैं इसलिये उनके लिये ऐसी संवैधानिक संस्थाओं का कोई महत्व नहीं हैय और भारतीय जनता पार्टी शासन में ऐसे ही लोगों को ये पद अधिक आसानी से मिलते हैं जो उस आसन को अधिकतम गंदला कर सकें। मटियामेट कर दें। इसलिये अपनी कार्रवाई के दौरान बिरला अक्सर सदस्यों से श्बैठ जाओश, श्नो...नोश, श्यह नहीं चलेगाश् श्आपकी बात रेकार्ड में नहीं जायेगी... जैसे शब्दों में डांट-डपट करते रहते हैं। आगे-पीछे राष्ट्रपति का चुनाव होना है। साफ है कि उस पद की ओर दोनों तेजी से बढ़ना चाहते हैं। धनखड़ की संघ की पार्श्वभूमि नहीं है। वे सुप्रीम कोर्ट के सफल वकील होने के साथ जनता दल व कांग्रेस में लम्बा समय काटकर आये हैं। उन्हें संविधान का महत्व मालूम होना चाहिये परन्तु व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की इस होड़ के चलते वे भी लोकतंत्र और जनहित को भंगार कर रहे हैं। इसके कारण पिछले कई सत्रों की भांति ही संसद के मौजूदा सत्र में अब तक कुछ ही घंटे काम हो पाया है। संसद में काम न होने का फायदा हमेशा सत्तारुढ़ दल को होता है। बिरला व धनखड़ मिलकर भारतीय जनता पार्टी को दिलो-जान से लाभान्वित कर रहे हैं। पिछली दोनों व वर्तमान लोकसभाओं और राज्यसभा में विपक्ष को कुचलने और उसकी आवाज को खत्म करने की सुनियोजित योजना के अंतर्गत दोनों ने अपने संवैधानिक पदों का भरपूर दुरुपयोग किया है। किसी भी मुद्दे पर जिस तरीके से ये दोनों सरकार का बचाव करते अथवा पैरवी करते नऽार आते हैं, उससे अधिक शर्मनाक कुछ इसलिये नहीं हो सकता क्योंकि ये दोनों पद पार्टी हितों से बढ़कर जिम्मेदारियों के निर्वहन की अपेक्षा रखते हैं। पूरी संसदीय व्यवस्था इन दोनों पदों के निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से काम करने पर निर्भर है। इस वर्ष लोकसभा चुनाव के बाद दूसरी बार ओम बिरला को जब यह पद मिला तो उससे साफसंदेश गया कि जो भी संसदीय परम्परा को जितना बिगाड़ सकता है वह

उतना ही अधिक पुरस्कृत होगा। वरना जब भी मिली-जुली सरकार बनती है तो सत्ताधारी दल यह पद किसी सहयोगी पार्टी को प्रदान करता है। मोदी ने ऐसा नहीं किया। उसके पीछे यही कारण था कि वे इन दोनों के जरिये सम्पूर्ण राजनीतिक एकाधिकार कायम करना चाहते हैं। इसमें वे काफी हद तक सफल होते भी दिख रहे हैं। विपक्ष में रहते भाजपा हमेशा कहती रही है कि श्संसद को सुचारू रूप से चलाने की जिम्मेदारी सत्ता पक्ष की होती हैश, पर दस वर्षों से उसका नजरिया बदल गया है। अब वह विपक्ष को संसद के ठप होने के लिये जिम्मेदार मानने लगी है। तकरीबन हर सत्र का पैटर्न कुछ इस तरह का हो गया है कि किसी न किसी बात को लेकर सत्ता पक्ष की ओर से शोर-शराबा किया जाता है और जो राई भी नहीं है उसे पर्वत बनाकर सदन को ठप कर दिया जाता है। सरकार से सवाल पूछते ही सत्ताधारी दलों की ओर से विपक्ष पर हमले होते हैं। उस शोर-गुल में संख्या बल के आसरे दोनों सदनों के संचालकगण सरकार की ओर से रखे जाने वाले कानून पारित करा देते हैं जिनमें से ज्यादातर जनविरोधी रहे हैं। पिछले दशक भर से पता नहीं ऐसे कितने कानून भाजपा सरकार द्वारा पारित कराकर देश पर थोपे गये हैं जिन पर पहले चर्चा नहीं की गयी। लगता है कि संसद को इसी तरह से चलाने के निर्देश सम्भवतरू मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर से मिले हुए हैं। इस टास्क को कौन भली-भंति पूरा करता है- इसी के हिसाब से तय होगा कि अगला राष्ट्रपति कौन बनेगा। इस टास्क के साथ यह भी संदेश छिपा हुआ है कि संसद को पूरी तरह से अप्रासंगिक बना दिया जाये ताकि लोगों का लोकतंत्र से ही मोहभंग हो जाये और भाजपा तथा उसकी मातृ संस्था आरएसएस की मंशा के अनुरूप देश में मनुवादी व्यवस्था स्थापित की जा सके जिसके तहत शासन प्रणाली में लोगों की भागीदारी न हो। बिरला-धनखड़ की जोड़ी एक तरह से अपने-अपने सदनों को अपहृत कर मोदी-शाह के इसी मंसूबे को पूरा कर रही है। देश के गिने-चुने कारोबारियों के पक्ष में काम करने वाली सरकार के लिये ऐसे ही सदन मुफीद होते हैं। देश के सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर आवश्यक चर्चा को टालकर संसद को अप्रासंगिक बनाने के कारण ही संसद परिसर में कुछ ऐसे नजारे देखने को मिलते हैं जो कहने को अप्रिय लग सकते हैं परन्तु वे यह बतलाते हैं कि दोनों सदनों के भीतर उनकी बात को नहीं सुना जा रहा है। उन्हें बोलने के लिये कोई और मंच चाहिये।

सीरियाई राष्ट्रपति बशर-अल-असद सत्ता से बेदखल, रूस और ईरान को बड़ा नुकसान

नित्य चक्रवर्ती

पहले से ही युद्ध से तबाह पश्चिम एशियाई क्षेत्र अब सीरियाई राष्ट्रपति बशर-अल-असद सरकार के सत्ता से बेदखल होने से भू-राजनीतिक उथल-पुथल के एक नये दौर में प्रवेश कर गया है। राष्ट्रपति रविवार को दमिश्क से भागकर मास्को चले गये हैं और उन्हें रूसी सरकार ने वहां शरण दे दी है। वर्ष 2000 से लेकर पच्चीस वर्षों तक रूसी सहायता से मजबूती से शासन करने वाले सीरियाई बाथ पार्टी के नेता की हार राष्ट्रपति पुतिन के लिए एक बड़ी व्यक्तिगत हार है और पश्चिम एशिया में उनकी कूटनीति के लिए एक बड़ा झटका। वास्तव में, सत्तारूढ़ शासन को सहारा देने के लिए अरबों डॉलर खर्च करने के बाद यह एशिया से रूस की दूसरी बड़ी वापसी है। पहली घटना 1990 के दशक में हुई थी जब रूस ने अफगानिस्तान से हटने का फैसला किया था और डॉ. नजबुल्लाह सरकार को अफगान तालिबान के आगे बढ़ने के कारण मुश्किल में डाल दिया था। डॉ. नजबुल्लाह को फांसी पर लटका दिया गया था। इस तरह से असद भाग्यशाली रहे। उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को कुछ दिन पहले ही मास्को भेज दिया था और अब मास्को भागकर अपनी जान बचाई। 8 दिसंबर रविवार को दमिश्क में जो हुआ, वह बांग्लादेश में 5 अगस्त को ढाका में हुए घटनाक्रम से कुछ हद तक मिलता-जुलता है, जब प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस डर से भारत भागना पड़ा था कि प्रदर्शनकारियों द्वारा उनकी हत्या कर दी जायेगी, जो उनके आधिकारिक आवास पर हमला करने जा रहे थे। उन्हें खुद उनके सेना प्रमुख ने जाने के लिए कहा था। उन्हें बांग्लादेश वायु सेना के विमान में जल्दबाजी में जाना पड़ा। अपदस्थ राष्ट्रपति असद ने जाने से पहले रक्तपात को रोकने के लिए शांतिपूर्ण संक्रमण का आह्वान किया। उनके प्रधानमंत्री ने वास्तव में विद्रोहियों का स्वागत किया और असद विरोधी नेताओं से शांतिपूर्ण तरीके से नयी सरकार बनाने का आह्वान किया।

असद विरोधी विद्रोही कौन हैं और नये सीरिया के लिए उनका कार्यक्रम क्या है? यह एक बहुत ही जटिल प्रश्न है क्योंकि सरकार विरोधी गठबंधन इस्लामवादियों, क्षेत्रीय जनजातीय प्रमुखों के एक वर्ग और यहां तक कि कुछ तथाकथित समाजवादियों का एक मिश्रित संयोजन है। इसका मुख्य घटक हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) है जिसे तुर्की का समर्थन प्राप्त है और इस मुख्य समूह को सीरियाई राष्ट्रीय सेना कहा जाता है। एचटीएस को मूलरूप से 2013 में सीआईए के माध्यम से अमेरिकी प्रशासन द्वारा रूस समर्थित असद शासन को कमजोर करने की अमेरिकी रणनीति के रूप में वित्तपोषित किया गया था, ठीक उसी तरह जैसे अफगान युद्ध की शुरुआती अवधि में तालिबान को अमेरिकी सहायता दी गयी थी। लेकिन बाद के वर्षों में, अमेरिका ने अपनी प्रत्यक्ष सहायता वापस ले ली, हालांकि अन्य तरीकों से, अमेरिकी एजेंसियों ने विद्रोहियों की मदद की। अमेरिका आधिकारिक तौर पर विद्रोहियों की मदद नहीं कर सका क्योंकि उन पर अल-कायदा से जुड़े इस्लामवादी होने का संदेह था। फिर तुर्की केंद्र में आया और उसने असद विरोधी गठबंधन की मदद करना शुरू कर दिया। तुर्की की सीरियाई क्षेत्रों में सीमावर्ती क्षेत्रों में रुचि है। वर्तमान में, इसके सीमावर्ती क्षेत्र में लगभग 2.9 मिलियन सीरियाई शरणार्थी हैं। विद्रोही सरकार के आकार लेने की स्थिति में तुर्की उन्हें उनके वतन वापस भेजने में बहुत रुचि रखता है। एचटीएस विद्रोही पश्चिम एशियाई युद्ध में हर हितधारक को भ्रमित कर रहे हैं। नेताओं का कहना है कि अब उनका अल-कायदा से कोई संबंध नहीं है, लेकिन वे कट्टर इस्लामवादी हैं। राष्ट्रपति चुने गये डोनाल्ड ट्रंप, जो अब अमेरिकी विदेश नीति को निर्देशित कर रहे हैं, ने पेरिस में कहा कि अमेरिका को सीरियाई युद्ध में कोई दिलचस्पी नहीं है। वास्तव में वह सच नहीं बोल रहे थे। अमेरिका के हित निश्चित रूप से हैं, लेकिन अमेरिका पहले सीरियाई सरकार के एक वर्ग के साथ अपने संबंध स्थापित करना चाहेगा और फिर अपने फैसले पर आगे बढ़ेगा। अभी, शीर्ष पर बैठे इस्लामवादी अमेरिका और इजरायल दोनों के बहुत खिलाफ हैं। अमेरिकी एजंसियां पीछे से काम कर रही हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे नये प्रशासन में कुछ ऐसे लोगों को ढूंढें जो उनके दबाव में कमजोर पड़ सकें जहां तक इजरायल का सवाल है, असद का पतन उनके लिए बहुत सकारात्मक घटनाक्रम है। पहले ही, इजरायल ने हिजबुल्लाह को बेअसर कर दिया है और लेबनान युद्धविराम घटते आतंकवादियों को वापसी करने में मदद नहीं करने वाला है। इस क्षेत्र में इजरायल का मुख्य मजबूत दुश्मन ईरान है। ईरान को झटका लगा है क्योंकि ईरानी सरकार ने राष्ट्रपति असद को बचाने में भारी मात्रा में धन लगाया है। ईरान का कमजोर होना इजरायल के लिए फायदेमंद है। अगर 20 जनवरी को ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद हमास के साथ पूर्ण युद्धविराम का मुद्दा उठाया जाता है, तो इजराइल और खास तौर पर प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ट्रंप के मुकाबले बेहतर सौदेबाजी की स्थिति में होंगे। फिलहाल, एचटीएस नेता अबू मोहम्मद अल-जुलानी एक मान्यता प्राप्त आतंकवादी है और एचटीएस पर अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र ने भी प्रतिबंध लगा रखा है। जुलानी अंतरराष्ट्रीय मीडिया को इंटरव्यू देकर सुर्खियां बटोरना चाहता है। जब तक उस पर से आतंकवादी का टैग नहीं हटाया जाता, तब तक अमेरिका उसके साथ आधिकारिक तौर पर बातचीत नहीं कर सकता। सीरिया में 900 अमेरिकी सैनिक हैं। रूस के पास सीरियाई जलक्षेत्र में नौसैनिक अड्डे और कर्मी हैं। अमेरिका देखेगा कि रूस उन्हें वापस लेता है या नहीं। स्थिति इतनी अस्थिर है कि महाशक्तियां अभी कोई अंतिम फैसला नहीं ले सकतीं। वे कुछ दिनों तक इंतजार करेंगे और देखेंगे कि नयी सीरियाई सरकार की प्रकृति क्या होगी।

मेष:- आप वाक्चातुर्य से मीठे सम्बंध बांध सकेंगे, जो कि भविष्य में आपके लिए लाभदायी सिद्ध होंगे। वैचारिकरुप से समृद्धि बढ़ेगी।

वृषभ:- आपको वाद-विवाद में अच्छी सफलता मिलेगी। परिश्रम की अपेक्षा कम प्राप्ति होने पर भी अपने कार्य में आप अग्रसर हो सकेंगे।

मिथुन:- भावना और संवेदनशीलता में बहकर स्त्रीवर्ग से सम्बंध न बांधें। मन दुविधा में रहने से निर्णय लेने में बाधा आ सकती है। प्रवास टालें।

कर्क:- आज का दिन प्रफुल्लितता से भरा रहेगा। नए कार्य का आरंभ भी आज कर सकते हैं। मित्रों और स्नेहीजनों से भेंट होने से आनंद हो सकता है।

सिंह:- आपके लिए मिश्र फलदायी है आज का दिन। परिजनों के साथ आप अच्छी तरह से समय बिताएंगे। उनका सहयोग भी मिल सकता है।

कन्या:- आज का दिन परोपकार और सदभावनाओं में बीतेगा। मानसिक रूप से कार्यभार अधिक रहेगा। आर्थिक लाभ होने की संभावना है।

तुला:- आज का दिन आपके लिए प्रतिकूल रहने से सावधानी बरतने की गणेशजी सलाह देते हैं। आज आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

वृश्चिक:- आज का दिन आपके लिए लाभदायी है। मित्रों के साथ भेंट होगी तथा उनके साथ घूमने-फिरने, आनंद-प्रमोद करने में खर्च होगा।

धनु:- आपकी यश, कीर्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में उच्च पदाधिकारी खुश रहने से पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी। स्वास्थ्य बना रहेगा।

मकर:- बौद्धिक कार्य या साहित्य लेखन जैसी प्रवृत्तियों के लिए आज अनुकूल दिन है। व्यवसाय के क्षेत्र में प्रतिकूल वातावरण आपके मन को अस्वस्थ करेंगे।

कुंभ:- आपको आज निषेधात्मक कार्यों और नकारात्मक विचारों से दूर रहने की सलाह देते हैं। झगड़े- विवाद से बचें, क्रोध और वाणी पर संयम रखें।

मीन:- दैनिक कार्यों से बाहर निकल कर आज आप घूमने-फिरने और मनोरंजन के पीछे समय बिताएंगे। व्यवसाय में भागीदारी के लिए शुभ समय है।

लोकतंत्र और न्यायपालिका दोनों खतरे में

इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश शेखर कुमार यादव ने रविवार आठ दिसंबर को विश्व हिंदू परिषद के कार्यक्रम में शिरकत की। इस दौरान वे भाजपा के राजनैतिक एजेंडे और कट्टर हिंदुत्व की सोच को आगे बढ़ाते नजर आए। जस्टिस यादव का भाषण रविवार से ही सोशल मीडिया के जरिए सब ओर पहुंच चुका है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट तक इस भाषण को पहुंचने में शायद दो दिन लग गए। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार दोपहर को एक बयान जारी कर कहा कि उसने इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज शेखर कुमार यादव के उस भाषण का संज्ञान लिया है। जिसे मीडिया ने प्रकाशित किया है। सुप्रीम कोर्ट ने बयान में कहा- श्इलाहाबाद हाईकोर्ट से और विवरण मंगाया गया है और मामला विचाराधीन है।श् वहीं देश के वरिष्ठ वकील, राज्यसभा सांसद और सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष कपिल सिब्बल ने कहा है कि उनकी कांग्रेस, सपा, माकपा आदि दलों के कुछ नेताओं से चर्चा हुई है और वे जस्टिस यादव के खिलाफ महाभियोग लाने की तैयारी कर रहे हैं। कपिल सिब्बल ने इस मामले में प्रधानमंत्री और सत्तापक्ष का सहयोग मांगा है, साथ ही कहा है कि सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम को देखना चाहिए कि ऐसे लोग जज न बनें। अदालतों में बैठे लोग हिंदुत्व की पैरोकारी कर रहे हैं, यह बात संविधान की मर्यादा, न्यायपालिका की गरिमा और लोकतंत्र के तकाजों के खिलाफ जरूर है, लेकिन संघ के निर्देशों पर नरेन्द्र मोदी के बनाए नए भारत में यह चलन बढ़ता जा रहा है। इसका सार्वजनिक इजहार तो तभी हो चुका था जब पांच जजों की पीठ ने बाबरी मस्जिद तोड़ कर खाली की गई जमीन को हिंदू पक्ष के हवाले कर दिया और फिर राम मंदिर बनाने की पूरी व्यवस्था भी कर दी। बाबरी मस्जिद तोड़ना अपराध था, यह बात सुप्रीम कोर्ट के फैसले में आने के बावजूद अपराधी खुले घूम रहे हैं, सम्मानित हो रहे हैं, यह नए भारत का सच है। पांच जजों की पीठ में शामिल तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई अब राज्यसभा सांसद हैं। इसी तरह कलकत्ता हाईकोर्ट में जस्टिस अभिजीत गंगोपाध्याय ने इस साल मार्च में अपनी अंतरात्मा की आवाज पर इस्तीफा दे दिया और फिर दो महीने बाद ही वे भाजपा की टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ने उतर गए।

फिलहाल न्यायपालिका की साख इतनी बची है कि आसंदी पर बैठे लोगों ने पद पर बने रहते हुए चुनाव लड़ना शुरु नहीं किया है। हालांकि मोदी सरकार चाहेगी तो संविधान में संशोधन कर इसे भी मुमकिन करा देगी। आखिर देश ने मुख्य न्यायाधीश रहे डी वाय चंद्रचूड़ और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की एक साथ गणेश आरती करती तस्वीरें देश ने देखी ही हैं और इस पर सवाल उठे तो पूर्व मुख्य न्यायाधीश को इसमें कुछ गलत भी नहीं लगा। बल्कि उन्होंने तो राम मंदिर पर दिए अपने फैसले के बारे में यह भी कहा है कि उन्होंने देवी प्रतिमा के सामने बैठकर इस पर मंथन किया। हाल के इन प्रसंगों के अलावा कई और ऐसे प्रकरण दर्ज हैं, जिनमें न्यायाधीश मोर के आंसुओं और मोरनी के गर्भवती होने पर ज्ञान दे रहे हैं या घृणा भरे भाषण देने वालों के चेहरों के भाव पढ़ रहे हैं कि उन्होंने गुस्से से ऐसा कहा या मुस्कुराते हुए जहर उगला। ये तमाम उदाहरण यह समझने के लिए काफी हैं कि अब देश के तीसरे स्तंभ न्यायपालिका में भी ऑक्टोपस की तरह हिंदुत्व की भुजाएं दसों दिशाओं से बढ़ चुकी हैं। सत्ता और प्रशासन में बैठे लोगों से देश की उम्मीदें चुकती जा रही थीं, क्योंकि यहां से जो फैसले लिए जा रहे हैं, उनमें शक्तिसंपन्न, सवर्ण तबकों को ही तवज्जो मिलती है। जो गरीब हैं, वर्ण व्यवस्था में निचले क्रम पर हैं, या अल्पसंख्यक हैं, उनके हित के लिए खैरात की तरह कुछ योजनाएं चलाई जाती हैं, ताकि वे उसी में खुश रहें। अन्याय के इस माहौल में केवल अदालत से लोगों की उम्मीदें बंधी थीं कि यहां चाहे जितनी देर लगे लेकिन जाति, धर्म, धन, लिंग सबके भेद से परे उठकर इंसाफ हासिल होगा। लेकिन जस्टिस शेखर कुमार यादव के भाषण से उस उम्मीद पर एक गहरा प्रहार हुआ है। गौरतलब है कि विश्व हिन्दू परिषद के विधि प्रकोष्ठ (लीगल सेल) ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के लाइब्रेरी हॉल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। इसमें जस्टिस शेखर यादव के अलावा इलाहाबाद हाई कोर्ट के एक और मौजूदा जज जस्टिस दिनेश पाठक भी शामिल हुए थे। कार्यक्रम में श्वक्फ बोर्ड अधिनियमश, श्धर्मान्तरण-कारण एवं निवारणश् और श्समान नागरिक संहिता एक संवैधानिक अनिवार्यताश् जैसे विषयों पर चर्चा हुई, जिससे समझ आता है कि इस आयोजन का मकसद क्या था। जस्टिस शेखर यादव ने श्समान नागरिक संहिता एक संवैधानिक अनिवार्यताश् विषय पर बोलते हुए कहा कि देश एक है, संविधान एक है तो कानून एक क्यों नहीं है? जस्टिस यादव ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की आलोचना करते हुए कहा कि हमें किसी का कष्ट देखकर कष्ट होता है, लेकिन आपके यहां ऐसा नहीं होता है। उन्होंने लोकतंत्र को धता बताते हुए यहां तक कह दिया कि हिन्दुस्तान में रहने वाले बहुसंख्यक के अनुसार ही देश चलेगा। यही कानून है। आप यह भी नहीं कह सकते कि हाई कोर्ट के जज होकर ऐसा बोल रहे हैं। कघनून तो भैय्या बहुसंख्यक से ही चलता है। परिवार में भी देखिए, समाज में भी देखिए। जहां पर अधिक लोग होते हैं, जो कहते हैं उसी को माना जाता है।श् इसके अलावा सांप्रदायिक नफरत जाहिर करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द कठमुल्ला का इस्तेमाल करते हुए जस्टिस शेखर यादव ने ये भी कहा कि श्कठमुल्लेश् देश के लिए घातक हैं। श्जो कठमुल्ला हैं, श्शब्दश् गलत है लेकिन कहने में गुरेज नहीं है, क्योंकि वो देश के लिए घातक हैं. जनता को बहकाने वाले लोग हैं. देश आगे न बढ़े इस प्रकार के लोग हैं, उनसे सावधान रहने की जरूरत है। जिस तरह से भाजपा और संघ के राजनैतिक एजेंडे को जस्टिस यादव ने आगे बढ़ाया है, उसकी जितनी निंदा की जाए, वो कम है।

मुख्य विकास अधिकारी ने विकास भवन सभागार में की ई ऑफिस के सम्बन्ध में बैठक

सिकंदरा कानपुर देहात। मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन0 की अध्यक्षता में ई ऑफिस के सम्बन्ध में बैठक हुई। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि सभी विभाग अपने विभागों में ई फाइलिंग की प्रगति बढ़ाएं। ई फाइलिंग से जुड़े सभी अधिकारी अपनी डीएससी बनवाना सुनिश्चित करें। प्रतिदिन ई फाइलिंग की प्रगति की समीक्षा की जाये। प्रमुख व बड़े विभागों में ई ऑफिस पर विशेष जोर दिया जाये एवं सभी विभागों में स्कैनर की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये। दस्तावेजों को स्कैन कर ई फ़ाइल में बदला जाये। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही ई-आफिस की प्रक्रिया पूर्ण कर ली जाए चूँकि माह-दिसम्बर के बाद से विकास भवन कार्यालय में कोई भी ऑफ़लाइन फ़ाइल स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने बताया कि ई-ऑफिस को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य कागजों की बचत करना है इसके साथ ही शासकीय कार्यों को गति प्रदान करना है। ई-ऑफिस में किसी भी समय निर्धारित दस्तावेज को खोलकर देखा जा सकता है। जिससे भविष्य में पेपरलेस कार्य को बढ़ावा दिया जा सके। बैठक में जिला विकास अधिकारी, जिला कृषि अधिकारी, अर्थ एवं संख्याधिकारी एवं अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

क्रीड़ा ज्ञान परीक्षा में कर्तव्य कटियार ने कानपुर प्रांत से चतुर्थ स्थान पाने पर मित्रों, शिक्षकों ने दी बधाई व शुभकामनाएं

अकबरपुर कानपुर देहात। जनपद मे खेलों की परम्परा मे अपने मुकाम तक पहुचने मे कड़ी मेहनत करने के बाद छात्रों मे उत्साह अलग ही होता है। इसी को लेकर खेलों के लिये समर्पित क्रीड़ा भारती द्वारा हर वर्ष आयोजित की जाने वाली क्रीड़ा ज्ञान परीक्षा मे कर्तव्य कटियार पुत्र विजय कटियार ने कानपुर देहात से प्रदेश मे चतुर्थ स्थान अर्जित करने के बाद मित्रों के अलावा शिक्षक वंधुओं तथा गणमान व्यक्तियों ने बधाई के साथ शुभकामनाएं तथा उज्वल भविष्य की कामना की है।

यज्ञ वेदी में हवन के लिए हुआ अग्नि मंथन

पैलानी, (संवाददाता)। तहसील अंतर्गत सिंधनकला गांव में स्थित युवक मंगल दल मैदान में आयोजित 109 कुंडीय श्री राम महायज्ञ में यज्ञवेदी के लिए अग्नि मंथन कर आग प्रज्वलित की गई आज प्रज्वलित होते ही संतों ने जय श्री राम के नारे लगाए और वही आग 109 कुंडो में डालकर वैदिक मंत्र उच्चारण के बीच प्रख्यात आचार्य द्वारा हवन कराया गया वहीं इस दौरान आयोजक नरोत्तम दास जी त्यागी जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी रामनारायण दास जी महाराज,राघवदास जी महाराज,कुरसेजा धाम के महंत 1008 श्री परमेश्वर दास जी महाराज राघव दास जी महाराज आदि ने यज्ञ मंडप मे मौजूद मुख्य यजमान मैयादीन सिंह गौर व अन्य यजमानों के यज्ञवेदी में अग्नि मंथन की हुई आग को डालकर यज्ञ में आहुति डाली गई। वहीं दूसरी ओर रामकथा में भगवान श्री राम के द्वारा किए गए कार्यकलापों को लेकर श्रद्धालुओं को अपनी अमृतमयी वाणी से भावविभोर किया।

बीजेपी सरकार में मंहगाई से लोगो की टूटी कमर : शेखू खान

2027 में एक बार फिर से बनेंगे मुख्यमंत्री अखिलेश यादव

माती कानपुर देहात। समाजवादी पार्टी कार्यालय के सभागार कक्ष में मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड व लोहिया वाहिनी की मासिक बैठक में समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश सचिव शेखू खान ने कहा राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अखिलेश यादव जी को 2027 में अगर मुख्यमंत्री बनना है तो घर-घर जाकर हम लोगों को वोट बढ़ाने काम करना पड़ेगा शेखू खान ने कहा समाजवादी पार्टी की नीतियों को बताना पड़ेगा भारतीय जनता पार्टी की सरकार में गरीब और गरीब हो गया अमीर और अमीर हो गया इस सरकार महंगाई में कमर तोड़ दी पेट्रोल डीजल गैस आसमान छू रहे हैं शेखू खान ने कहा चारों तरफ लूट मची हुई है जनता की कहानी सुनवाई नहीं हो रही है शेखू खान ने कहा 2027 में समाजवादी पार्टी सरकार बनने पर इन चीजों पर अंकुश लगाया जाएगा आज की बैठक में समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष अरुण उर्फ बबलू राजा जिला महासचिव पवन कटियार यूथ ब्रिगेड के जिला अध्यक्ष मनोज यादव लोहिया वाहिनी के जिला अध्यक्ष वीरू कुशवाहा सैनिक प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष बृजमोहन यादव यूथ ब्रिगेड के जिला महा सचिव पवन यादव मनन कुरैशी डाक बाबू भगवान भदौरिया आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

जनपद में हाई स्कूल एवं इंटर की छात्राओं के लिये कॅरियर काउन्सिलिंग कार्यशाला का हुआ आयोजन

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में जिला सेवायोजन अधिकारी शशि तिवारी में बताया कि 10 दिसंबर 2024 को जिला सेवायोजन कार्यालय कानपुर देहात, द्वारा राजकीय बालिका इंटर कालेज पुखरायाँ, कानपुर देहात में हाई स्कूल, इण्टर के छात्राओं के लिए कॅरियर काउन्सिलिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया।कार्यशाला में विशेष काउन्सलर, प्रो0 अमेय करकरे, कम्प्यूटर साइंस इंजीरियरिंग डिपार्टमेंट, आई0आई0 टी0 एवं श्री अशुतोष पाण्डेय, रिसर्च ऑफिसर, आई0आई0टी0 कानपुर नगर ने इंटरमीडियट के उपरान्त विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की विस्तृत जानकारी दी तथा छात्राओं के कॅरियर संबंधी सवालों का जवाब भी दिया तथा उनका मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में जिला सेवायोजन अधिकारी श्रीमती शशि तिवारी, बालिका इंटर कालेज, पुखरायों की प्राधानाचार्या श्रीमती कल्पना शुक्ला व समस्त स्टाफ, श्री अनुज यादव (यप) श्री राम किशोर सोनकर (वरिष्ठ सहायक) श्री विनोद कुमार (कनिष्ठ सहायक) एवं संस्थान के शिक्षक गण द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन प्राधानाचार्या ने धन्यवाद के साथ किया गया।

भूतपूर्व/सेवारत सैनिकों एवं उनके आश्रितों की समस्याओं के निराकरण हेतु बैठक 18 दिसम्बर को

कानपुर देहात। जनपद कानपुर देहात के सभी भूतपूर्व / सेवारत सैनिकों एवं उनके आश्रितों को सूचित किया जाता है कि, आपकी विभिन्न जिला स्तरीय समस्याओं के निराकरण हेतु जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देश अनुसार, दिनांक 18 दिसम्बर 2024 को अपराह्न 12:00 बजे, कलेक्ट्रेट स्थित मां मुक्तेश्वरी देवी सभा कक्ष माती मुख्यालय में फ़जिला सैनिक बन्धुफ़ की बैठक आहूत की गई है। अतःअपनी समस्याओं से संबंधित प्रार्थना पत्र सहित बैठक में उपस्थित होने का कष्ट करें।

एसओ उदयपुर के निलंबन की मांग पर अड़े वकील

लालगंज, प्रतापगढ़। साथी अधिवक्ता के खिलाफ क्रास केस दर्ज करने को लेकर दूसरे दिन मंगलवार को भी यहां अधिवक्ताओं मे आक्रोश का माहौल दिखा। नाराज अधिवक्ताओं ने कामकाज का बहिष्कार कर उदयपुर एसओ के निलंबन की मांग दोहरायी। वही संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा उपाध्यक्ष बालेन्द्र त्रिपाठी की अगुवाई मे पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करते वकीलो ने एसडीएम नैंनसी सिंह से चेंबर में मिलकर भी उदयपुर पुलिस की भूमिका को लेकर नाराजगी जतायी। अधिवक्ताओं ने एसडीएम को उदयपुर पुलिस की अनुचित कार्रवाईयों का बिंदुवार ज्ञापन सौपकर मजिस्टेऊट्री जांच पर भी जोर दिया। एसडीएम ने अधिवक्ताओ को उच्चाधिकारियों से वार्ता कर समुचित कार्रवाई का भरोसा दिलाया। इस मौके पर देवी प्रसाद मिश्र, अनिल त्रिपाठी महेश, टीपी यादव, ज्ञानप्रकाश शुक्ला, शैलेन्द्र सिंह, संतोष पाण्डेय, श्रीशचंद्र पाण्डेय, तपन पाण्डेय, विनय शुक्ला, निरंजन यादव, सुशील शुक्ला, दीपेन्द्र तिवारी, प्रमोद सिंह, केबी सिंह, शहजाद अंसारी, शिव नारायण शुक्ल, सिंटू मिश्र, विपिन शुक्ला, आदि अधिवक्ता रहे।

मुख्यमंत्री के बस्ती आगमन पर कर्मा देवी शैक्षणिक संस्थान का पुलिस अधीक्षक ने लिया जायजा

बस्ती। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के बस्ती आगमन पर कर्मा देवी शैक्षणिक संस्थान में पुलिस अधीक्षक बस्ती गोपाल कृष्ण चौधरी के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक बस्ती ओम प्रकाश सिंह के द्वारा कार्यक्रम स्थल एवं पार्किंग व्यवस्था का निरीक्षण किया गया तथा समस्त ड्यूटी में लगे अधिकारी कर्मचारीगण को ब्रीफ किया गया। मौके पर पुलिस उपाधीक्षक सदर श्री सत्येंद्र भूषण तिवारी व अन्य अधिकारी कर्मचारीगण मौजूद रहे।

रूरा में खनन माफिया पर कॉल बन कर टूटा तहसील प्रशासन

रूरा कानपुर देहात। थाना क्षेत्र के वीरपुर नक़सिया गांव से अवैध खनन में लगीं पांच ट्रैक्टर चार ट्रॉलियां और मिट्टी खोदने की एक मशीन पकड़ी गई है। सभी को पकड़ कर थाना परिसर में खड़ा करवा दिया गया है। सोमवार की रात्रि 11 बजे थाना क्षेत्र के गांव वीरपुर नक़सिया में जमकर अवैध खनन चल रहा था। सुबह से रात्रि तक कई ट्रैक्टर-ट्रॉली मिट्टी भरकर ले जा रहे थे। यह देखकर स्थानीय लोगों ने तहसील मैथा प्रशासन को दे दी सूचना दे दी। राजस्व अधिकारी अपनी टीम लेकर गांव में पहुंच गए। टीम को देखकर खनन कर रहे लोग पांच ट्रैक्टर-चार ट्रॉली और मिट्टी खोदने की एक मशीन मौके पर छोड़कर भाग गए। तहसीलदार मैथा सुनील कुमार व नायब तहसीलदार अनिरुद्ध सिंह ने बताया कि पकड़े गए वाहनों को कार्यवाही कर थाना रूरा में खड़ा करा दिया गया है। अवैध खनन कराने वालों पर कार्रवाई की जा रही है। नायब तहसीलदार अनिरुद्ध सिंह ने बताया कि सभी वाहनों को सीज कर थाना रूरा पुलिस को सुपुर्द कर खनिज विभाग को रिपोर्ट भेज दी गई है।

सरकारी जमीन से भी मिट्टी खोद ले गए माफिया

ग्रामीणों के मुताबिक, थाना क्षेत्र के गांवो में लगातार अवैध खनन चल रहा है। माफिया इतने हावी हैं कि खाली जमीन व रिंद नदी तक नहीं छोड़ रहे। बिना अनुमति के सरकारी जमीन व रिंद नदी के किनारे से तक मिट्टी खोद ले गए। ग्रामीणों का कहना है कि कुछ दिन पहले यह मिट्टी खोदी गई थी, लेकिन इस संबंध में किसी ने शिकायत तक नहीं की।

संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित की गई संस्कृत पद गायन प्रतियोगिता

चित्रकूट ब्यूरो। रणछोड़दास महराज द्वारा जानकीकुण्ड में स्थापित रघुवीर मन्दिर ट्रस्ट (बड़ी गुप्त) के तत्त्वावधान में श्रीराम संस्कृत महाविद्यालय में संस्कृत पद गायन प्रतियोगिता का आयोजन सदगुरु सभागार में किया गया। जिसमें महाविद्यालय के 25 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। संस्कृत पद गायन प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में विकास पयासी एवं जयसूर्या दुबे ने संयुक्त प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान अनुज पाण्डेय एवं तृतीय स्थान श्रीधर गौतम ने प्राप्त किया। वही वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान सूरज शुक्ल, द्वितीय स्थान भरतदेव मिश्र एवं तृतीय स्थान शिवनरेश शुक्ल ने प्राप्त किया। कार्यक्रमों का संयोजन प्राचार्य डॉ. तुषारकान्त शास्त्री एवं सुरेन्द्र कुमार तिवारी के निर्देशन में हुआ। कार्यक्रम के अंत में विजयी विद्यार्थियों को सदगुरु शिक्षा समिति अध्यक्ष ऊषा जैन एवं ट्रस्टी डॉ बीके जैन ने पुरुस्कृत किया। प्रतियोगिता के मुख्य निर्णायक विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय डॉ कमलेश थापक एवं सद्गुरु पब्लिक स्कूल के संस्कृत शिक्षक राधाकान्त त्रिवेदी रहे। कार्यक्रम का संचालन देवभाषा संकृत में आचार्य पंकज कुमार पाण्डेय ने किया। इस मौके पर गुरुकुल के आचार्य डॉ. प्रेमप्रकाश पाण्डेय, शशिशेखर शुक्ल, देवदत्त शुक्ल, बालगोविन्द उपाध्याय, ओमप्रकाश तिवारी, सानन्त कुमार गर्ग, वागीशदत्त त्रिवेदी, हरिओम द्विवेदी, धर्मेन्द्र कुमार त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

भारतीय ज्ञान स्थली इंटर कॉलेज में डी.एल.एस.ए के बैनर तले मानवाधिकार दिवस पर संपन्न हुआ जागरूकता शिविर

कानपुर देहात। मानवाधिकार दिवस परमंगलवार को नबीपुर गजनेर रोड पर स्थित भारतीय ज्ञानस्थली इंटर कॉलेज नबीपुर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कानपुर देहात के तत्वावधान में एक जागरूकता शिविर का आयोजन संपन्न हुआ। उपरोक्त जागरूकता शिविर में भाग लेने पहुंचे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कानपुर देहात के सचिव/माननीय अपर जिला जज श्री हिमांशु कुमार सिंह का कॉलेज के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य समेत अन्य शिक्षकों ने बुके भेंट करके स्वागत किया।

इस जागरूकता शिविर को को संबोधित करते हुए प्राधिकरण के सचिव महोदय ने अपने संबोधन के माध्यम से कॉलेज के छात्रों एवं छात्राओं एवं शिक्षकों के अलावा उपरोक्त शिविर में उपस्थित विद्यार्थियों के अभिभावकों को विभिन्न प्रकार की विधिक जानकारियां देते हुए जनपद कानपुर देहात में 14 दिसंबर 2024 को प्रस्तावित राष्ट्रीय लोक अदालत के आयोजन के संबंध में जहां प्रचार प्रसार करने के लिए हेतु कॉलेज के शिक्षकों एवं छात्रों एवं छात्राओं को जागरूक किया। तथा राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से वादों का निस्तारण करने से होने वाले लाभ के बारे में भी विस्तृत रूप से जानकारी दी। प्राधिकरण के सचिव महोदय ने अपने संबोधन के दौरान मानवाधिकार के नियमों तथा कानून के बारे में भी कॉलेज के विद्यार्थियों , शिक्षकों एवं अभिभावकों को विस्तृत रूप से जानकारी दी।इस शिविर में 14 दिसंबर 2024 को जनपद में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के संबंध में प्रचार प्रसार के लिए पंपलेट भी वितरित किए गए। उपरोक्त आयोजन में प्रमुख रूप से जिला विद्यालय निरीक्षक कानपुर देहात के कार्यालय के डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर सत्यनारायण कटियार एवंउपरोक्त कॉलेज के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य, शिक्षकों के अलावा भारी संख्या में अभिभावकों तथा विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

दो पक्षों में जमकर चले लाठी डंडे से पांच हुए घायल

रूरा कानपुर देहात। थाना क्षेत्र के सराय गांव में सरकारी हैण्ड पंप से पानी भरने के विवाद में दो परिवारों में आपस में झगड़ा हो गया बात इतनी बढ़ गई की दोनो पक्षों में लाठी डंडे व कुल्हाड़ी चल गई जिनमे दोनों पक्षों के पांच लोग घायल हो गए है व एक गंभीर रूप से घायल हो गया है। पूरा मामला इस प्रकार है की सराय के रहने वाले सलमान ने बताया कि उसके मां घर के बाहर लगे सरकारी हैण्ड पंप से पानी भरने गई थी तभी पारिवारिक लोगो ने नल से बाल्टी फेक दी और गाली गलौच करने लगे इसी दौरान दोनों पक्षों में विवाद बढ़ गया और कुल्हाड़ी लाठी डंडे चलने लगे जिसमें एक पक्ष के बबली, सलमान व दूसरे पक्ष के चंदा, रेशमा, इमरान, गुल्पसा घायल हो गए है थाना पुलिस ने सभी घायलों को उपचार हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रूरा में भर्ती कराया जहां से डॉ प्रतीक पांडेय ने गंभीर रूप से घायल चंदा को जिला अस्पताल रिफर कर दिया है। चौकी प्रभारी अभिनेष चौधरी ने बताया कि तहरीर मिलने पर कार्यवाही की जायेगी।

सर्व धर्म किसान यूनियन के छात्र सभा की हुई बैठक

गुन्नौर संभल। भारतीय किसान यूनियन सर्व धर्म छात्र सभा की मासिक बैठक छात्र सभा के राष्ट्रीय महा उपाध्यक्ष कुदरकी निवासी हाजी चांद सलमानी के आवास पर आयोजित हुई जिसमें संगठन को मजबूत करने व जनहित के मुद्दों पर चर्चा की गई और राष्ट्रीय महा उपाध्याक्ष ने कहा कि यदि आपके सर पर भारतीय किसान यूनियन की टोपी है तो कोई भी अधिकारी रिस्वत नही मांग सकता यह संगठन देश का सबसे ईमानदार संगठन है इसलिए किसानों की समस्याओं के लिए एवं भ्रस्ट अधिकारियों के खिलाफ लड़ाई लड़ने को हमेशा तैयार रहता है किसान का सबसे मजबूत हथियार टोपी ओर लाठी है उसे हमेशा साथ रखो किसानों और मजदूरों की आवाजों को शासन प्रशासन के सामने ऐसे ही सभी पदाधिकारी मिलकर उठाते रहे! राष्ट्रीय महा उपाध्यक्ष ने कहा की किसानों की आवाज एक बार फिर से आंदोलन तेज किया जाएगा क्योंकि निगम अधिकारियों के आश्वासन के बाद भी कोई कार्य नहीं हुआ किसान यूनियन सर्व धर्म छात्र सभा के राष्ट्रीय महा उपाध्यक्ष हाजी चांद सलमानी ने कहा की हम देशहित के मुद्दों को आप लोगों के सामने मजबूती से रखते हैं। जिसके कारण विरोधी और देश द्रोही ताकत हमें और हमारे संस्थान को आर्थिक हानी पहुँचाने में लगे रहते हैं। देश विरोधी ताकतों से लड़ने के लिए हमारे हाथ को मजबूत करें। ज्यादा से ज्यादा आर्थिक सहयोग करें।जिसमे की किसान यूनियन के सभी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पल्स पोलियो अभियान के तहत डोर टू डोर नौनिहालों को दी गयी खुराक

लालगंज, प्रतापगढ़। पल्स पोलियो प्रतिरक्षण अभियान के तहत लालगंज सीएचसी के उदियापुर मेढ़ावां सांगीपुर वार्ड भेभौरा, उधरनपुर आदि गांवो मे मंगलवार को नौनिहालों को पोलियो खुराक पिलाई गयी। अधीक्षक डा. अरविन्द गुप्ता ने बताया कि डोर टू डोर अभियान के लिए पचास स्वास्थ्य टीमो का संचालन किया जा रहा है। अधीक्षक डा. अरविन्द गुप्ता ने इन टीमो को अभियान में पारदर्शिता के कड़े निर्देश दिये। उन्होनें विभिन्न गांवो मे भ्रमण कर लोगों को पोलियो जागरूकता को लेकर अभियान में सहयोग के लिए प्रेरित भी किया। वहीं अभियान को लेकर बीपीएम बृजेश पाण्डेय ने बताया कि अब तक इन टीमों द्वारा लगभग ढाई हजार बच्चो को पोलियो खुराक से संतृप्त किया जा चुका है।

युवा रील्स इंस्टाग्राम फेसबुक से बनाए दूरी

खेल ही स्वस्थ जीवन का आधार : वरूण मिश्र

सुलतानपुर। शहर के बाधमण्डी पर स्थित जिम दारा फिटनेस क्लब में आयोजित जिला स्तरीय आर्म रेसलिंग प्रतियोगिता के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रुप में पहुंचे पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष प्रत्याशी व कांग्रेस नेता वरुण मिश्रा ने युवाओं को फेसबुक, इंस्टाग्राम और रील्स से दूर रहने की हिदायत दी, उन्होंने कहा कि हम सुविधाओं का इस्तेमाल तभी कर सकते हैं जब हम पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे और पूर्ण रूप से स्वस्थ रहने का जरिया सिर्फ और सिर्फ व्यायाम है ! उन्होंने कहा कि आज का नौजवान सोशल मीडिया का शिकार हो चुका है, उसको लगता है कि मोबाइल से ही पूरी दुनिया संचालित होती है जबकि यह असलियत नहीं है उन्होंने कहा कि सुविधा देने के साधन कभी भी हमारा साध्य नहीं हो सकते ! नौजवानों को इस टेक्नोलॉजी पर निर्भर रहने से बचना होगा ! जिला आर्म रैसलिंग संगठन के अध्यक्ष शिवम पाठक ने आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया मैच रेफरी की भूमिका हिमांशु मिश्रा ने निभाई ! इस अवसर पर रेसलिंग के पूर्व चैंपियन राहुल तिवारी,अजय मिश्रा, फिटनेस क्लब के मालिक दारा खान प्रवीण श्रीवास्तव शबाना खान उपस्थित रहे ! प्रथम स्थान अंश, दूसरे स्थान पर आदित्य विश्वकर्मा व तीसरे स्थान पर ऋतिक रहे ! जिन्होंने क्रमशः गोल्ड, सिल्वर और काँस्य मेडल प्राप्त किया।

राष्ट्रीय दिव्यांगजन सम्मान से सम्मानित हुए समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य

प्रतापगढ़। हनुमंत निवास अयोध्या में देशभर से आए हुए दिव्यांगजनों का राष्ट्रीय सम्मेलन एवं दिव्यांगजन सम्मान समारोह 2024 का आयोजन हुआ। देशभर से आए दिव्यांग भाइयों ने जो अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं और दिव्यांगों की सेवा में अनवरत लगे हुए हैं उन सभी को दिव्यांगजन सम्मान 2024 से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति विपिन चंद्र दीक्षित उच्च न्यायालय इलाहाबाद व अध्यक्षता पूज्य आचार्य मिथिलेश नंदनी शरण जी महाराज व कार्यक्रम के संरक्षक गिरीश पति त्रिपाठी जी मेयर अयोध्या व अतिविशिष्ट अतिथि अखिलेश कुमार दिव्यांगजन आयुक्त रहे। प्रतापगढ़ में 25 वर्षों से दिव्यांगों की सेवा में अनवरत लगे रहने वाले जिले के समाजसेवी व एलायंस क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य को राष्ट्रीय दिव्यांगजन सम्मान 2024 से मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति विपिन चंद्र दीक्षित उच्च न्यायालय इलाहाबाद ने स्मृति चिन्ह अंग वस्त्र आदि देकर सम्मानित किया। इस भव्य आयोजन में समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित होने की जानकारी पर जिले एवं प्रदेश के लोगों ने रोशनलाल उमरवैश्य को बधाई दी।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि समाज सेवी रोशनलाल उमरवैश्य 25 वर्षों से दिव्यांगजनों की सेवा में लगे हैं। दिव्यांगों को हर सुविधा देने व दिलाने में समय-समय पर शासन व प्रशासन से अनुरोध कर उन्हें कोई दिक्कत ना हो इसके लिए लगे रहते हैं। इस दिव्यांगजन राष्ट्रीय सम्मान पाकर रोशनलाल उमरवैश्य ने जिले प्रदेश व देश का मान बढ़ाया है। रोशनलाल उमरवैश्य ने इस सम्मान के लिए पूरी आयोजन समिति व संयोजक नारायण का आभार जताते हुए कहा कि मुझे दिव्यांग भाइयों की और सेवा करने की प्रेरणा मिली है। भगवान मुझे जितनी शक्ति देंगे मैं सदैव दिव्यांग भाइयों की सेवा में लगा रहूंगा। बधाई देने वालों में राजीव कुमार आर्य, डॉ0 दयाराम मौर्य रत्न, आनंद मोहन ओझा, अनिल कुमार निलय, डॉ. विनय श्रीवास्तव, राजेश सिंह, संतोष कुमार, छेदीलाल, देवानंद, शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा, आदर्श कुमार, सूरज उमरवैश्य, विवेक कुमार,अर्चना खंडेलवाल, पूनम गुप्ता, रेखा उमरवैश्य, सुधा अग्रवाल, ज्योति, मेघा, सुधा अग्रवाल, आदि ने बधाई दी।

पंचायती राज मंत्रालय दिल्ली में आज सम्मानित होंगे प्रधान जय प्रकाश वर्मा एडवोकेट

भदैया- सुलतानपुर। जिले के विकासखंड भदैया स्थित ग्राम पंचायत अलीपुर में उत्कृष्ट कार्य करने एवं सरकार द्वारा आच्छादित समस्त योजनाओं के शत प्रतिशत क्रियान्वयन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले ग्राम प्रधान एडवोकेट जय प्रकाश वर्मा को आज दिल्ली के पंचायती राज भवन में सम्मानित किया जाएगा ! इसकी सूचना खंड विकास अधिकारी भदैया द्वारा दी गई !

गोधरा कांड से पूरा देश मर्माहत हुआ था: अभिषेक गुप्ता

फिल्म के रूप में सच्चाई सामने आई — गोधरा के सत्य को उजागर कर रही है फिल्म द साबरमती रिपोर्ट

सीतापुर। खैराबाद नगरपालिका परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता द्वारा खैराबाद नगरवासियों,नगरपालिका सभासद, कर्मचारी व भाजपा के स्थानीय पदाधिकारीयों के साथ द साबरमती रिपोर्ट फिल्म स्थानीय चंद्रा मैरिज लान में बड़ी एल.ई.ड़ी को लगवाकर दिखाया गया। द साबरमती रिपोर्ट देखने के बाद अभिषेक गुप्ता ने कहा यह फिल्म अपने-आप में बहुत कुछ कह रही है. सबसे पहले तो 1947 में धर्म के आधार पर जो आधा अधूरा बंटवारा हुआ वो आज भी कहीं ना कहीं जिन्न बनके कभी गोधरा में कभी बांग्लादेश में तो कभी कहीं और सामने आ रहा है. दूसरी बात जो इसें कहीं गई है कि सच पर झूठ की जितनी मर्जी परतें चढ़ा ली जाएं, एक दिन वो सच सामने जरूर आता है. वही नगरपालिका अध्यक्षा श्रीमती बेबी अभिषेक गुप्ता ने कहा इस फिल्म को देखने के बाद एक बात स्पष्ट हो गई कि गोधरा की घटना के बाद कितने सत्य देश से छुपाए गए थे इस फिल्म को देखने के बाद सनातन धर्म के अनुयायियों को यह पता चलेगा कि आतंक समर्थक हमारे लिए कैसा रवैया रखते हैं कैसे हिंदुओं के स्वाभिमान को छुपाने के लिए एक मिशनरी हमेशा कार्य करती है। अभिषेक गुप्ता ने कहा हम भारतीय जनता पार्टी का सामान्य कार्यकर्ता होने का मुझे जितना गर्व था इस फिल्म को देखने के बाद वह गर्व स्वाभिमान में परिवर्तित होकर इतना बढ़ गया है जिसका कोई अंकन नहीं हो सकता। भारतीय जनता पार्टी हमेशा सनातन की रक्षा के लिए कार्य करती रहती है। वही युवा ब्यवसाई व पत्रकार गौरव अग्रवाल ने कहा फिल्म युवा वर्ग को अवश्य देखनी चाहिए और खास कर उन लोगों को देखनी चाहिए जिनको झूठे इंजेक्शन रूपी साजिश के माध्यम से फर्जी भाईचारे की क्लासेस दी जा रही है। हालांकि सनातन धर्म विश्व बंधुत्व की बात करता है लेकिन सनातन धर्म झूठे भाईचारे का कभी समर्थन नहीं करता। इस अवसर पर अनूप विष्वकर्मा,रोमिल गुप्ता,आलोक बाजपेई, विष्णु गौतम,उमेश जैसवाल,कुलदीप जैसवाल,संदीप मिश्र,प्रह्लाद शास्त्री,विवेक विश्वकर्मा,पुनीत सिंह,राम किशोर जैसवाल,संदीप गुप्ता,सुनील मौर्य,सौरभ दीक्षित,मनोज राणा आदि सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने जनसुनवाई के दौरान दूर-दराज से आये हुये शिकायतकर्ताओं की सुनी समस्याएं

प्रतापगढ़। जिले में जिलाधिकारी संजीव रंजन ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। शिकायतकर्ता राजेन्द्र वर्मा निवासी दीनापुर थाना मानधाता शिकायत किया कि प्रार्थी के घर आने-जाने का रास्ता पैतृक आबादी से है जिस पर विपक्षीगण शिव बहादुर वर्मा व प्रदीप वर्मा गुन्डई के बल पर आने-जाने के रास्ता को काट लिये है तथा कटीला तार तथा घास-फूस रख दिये है, प्रार्थी को मोटर-साइकिल व आने जाने की कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकार लालगंज एवं एसएचओ मानधाता को निर्देशित किया है कि जांच करें एवं सुनिश्चित करायें कि रास्ता अवरूद्ध न हो। शिकायतकर्ता शीतला प्रसाद निवासी गोड़े ने शिकायत किया कि प्रार्थी अपनी आबादी में हैण्ड पाइप लगा रहा है तो विपक्षीगण लखन लाल, बी0एल0 सिंह, शिवनायक सिंह, दीपू सिंह द्वारा अवरोध उत्पन्न किया जा रहा है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने एसएचओ कोतवाली नगर को निर्देशित किया है कि हैण्डपम्प को उचित जगह पर लगाने में अवरोध न हो और दोषियों के विरूद्ध कार्यवाही की जाये। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त राजस्व शिकायतों के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निष्पक्ष जांच कर, शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से करें जिससे शिकायतकर्ता को इधर-उधर भटकना न पड़े। उन्होने अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया है कि जनकल्याणकारी योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करें, कोई भी पात्र व्यक्ति योजना से वंचित न रहें इसका विशेष ध्यान दें। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जनता की शिकायतों को शासन की मंशानुरूप गुणवत्तापूर्ण निस्तारण ससमय करायें, शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही कदापि न बरती जाये।

धर्म परिवर्तन के अभियोग में वांछित 3 अभियुक्त गिरफ्तार

अमेठी। अमेठी जनपद के थाना रामगंज क्षेत्र अंतर्गत मंगलवार को उ0नि0 चिन्तामणि तिवारी थाना रामगंज द्वारा तलाश वांछित के दौरान मुखबिर की सूचना पर 3/5(1) उ0प्र0 विधि विरुद्ध धर्म परिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम 2021 थाना रामगंज अमेठी में वांछित अभियुक्तों 1.ओमप्रकाश पुत्र स्व रामउजागिर निवासी अग्रेसर थाना रामगंज 2.राजलाल पुत्र स्व0 जगन्नाथ निवासी वनवारीपुर थाना रामगंज 3.संदीप पुत्र सत्यनरायन निवासी टीकरमाफी थाना संग्रामपुर अमेठी को अभियुक्त ओमप्रकाश के घर से दिन में गिरफ्तार किया गया।

देर रात शादी में गए युवक का गला कटा खेत में मिला शव

पुलिस अधीक्षक ने घटनास्थल का किया निरीक्षण

अमेठी। जनपद में हत्या की बड़ी वारदात सामने आई जहां देर रात गांव में ही आई एक बारात में शामिल होने गए युवक की गला काटकर हत्या कर दी गई।हत्यारो ने युवक का शव उसके खेत में ही फेंक दिया।देर रात से युवक को तलाश रहे परिजन जब खेत की तरफ पहुंचे तो युवक का खून से लथपथ शव मिला जिसके बाद पूरे गांव में हड़कंप मच गया और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर इकट्ठा हो गए। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय पुलिस वह पुलिस अधीक्षक अमेठी अनूप कुमार सिंह पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर परिजनों को कार्रवाई का भरोसा दिया और पुलिस घटना की जांच में जुट गई है।पूरा मामला जामो थाना क्षेत्र के जोरावरपुर मठिया गांव का है जहां का रहने वाला संजीव मिश्रा 27 वर्ष देर रात गांव में ही शादी में शामिल होने गया था। युवक जब घर नहीं लौटा तो परिजन उसकी तलाश में जुट गए लेकिन उसका कहीं पता ना चला। परिजन मंगलवार को सुबह युवक को खोजते खोजते खेतों की तरफ पहुंचे तो खेत के बीच में युवक का शव पड़ा था जिसका गला कटा हुआ था। युवक के मौत की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर इकट्ठा हो गए और पुलिस को सूचना दी गई।सूचना मिलते ही जामो पुलिस मौके पर पहुंची इसके बाद पुलिस अधीक्षक अमेठी अनूप कुमार सिंह भी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर आसपास के लोगों से जानकारी की और घटना के खुलासे के लिए पुलिस टीम को आवश्यक निर्देश दिए गए जिसके साथ ही पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। बताया जा रहा है कि हत्यारो ने उसकी हत्या किसी और जगह पर की और शव को लाकर उसी के खेत में फेंक दिया।

अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा ली गई रिजर्व पुलिस लाइन में परेड की सलामी

अमेठी। रिजर्व पुलिस लाइन अमेठी में मंगलवार की परेड के अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक अमेठी हरेन्द्र कुमार द्वारा सर्वप्रथम परेड का मान-प्रणाम ग्रहण करते हुए परेड का निरीक्षण किया गया तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान एवं जनमानस से उचित व्यवहार, अपराधों की रोकथाम एवं समाज में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने हेतु आवश्यक हिदायतें दी गयी । इसी क्रम में रिजर्व पुलिस लाइन अमेठी के भोजनालय, बैरिकों की साफ-सफाई, परिवहन शाखा, क्वार्टर गार्द, स्टोर, कैश तथा गणना कार्यालय का निरीक्षण कर प्रतिसार निरीक्षक को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये । इस दौरान प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन जनपद अमेठी व अन्य अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने भारतीय खाद्य निगम डिपो पीईजी गोदाम जामों तथा राइस मिल गौरीगंज का किया आकस्मिक निरीक्षण

अमेठी। जिलाधिकारी निशा अनंत के द्वारा मंगलवार को भारतीय खाद्य निगम डिपो पी0ई0जी0 जामों गोदाम का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय जिला खाद्य विपणन अधिकारी राजेश्वर प्रताप सिंह साथ में उपस्थित रहे। मूल्य समर्थन योजनान्तर्गत धान क्रय केन्द्रों पर खरीदे गये धान से उत्पादित सी0एम0आर0 को सम्बन्धित चावल मिलों के द्वारा प्रेषित किये जा रहे सी0एम0आर0 (फोर्टिफाइड चावल) का उतार जामों डिपो में किया जा रहा है। पूर्व में जामों डिपो में लेबर की समस्या व सी0एम0आर लाटो की संख्या मे तीव्रता से उतार न होने के कारण जिलाधिकारी द्वारा कठोरता से निर्देश दिये गये। मौके पर उपस्थित विजय सिंह, डिपो मैनेजर, भारतीय खाद्य निगम को जिलाधिकारी द्वारा यह निर्देश दिया गया कि किसी भी दिन ट्रकों की हाल्टिंग नही होनी चाहिये, भारतीय खाद्य निगम डिपो में संचालित धर्मकॉटा सही रहे, पर्याप्त संख्या में लेबर की उपलब्धता होनी चाहिये, डिपो की क्षमता 20000 मी0टन है। इसके सापेक्ष रिक्त स्थान भरने से पूर्व ही सी0एम0आर0 भण्डारण हेतु नया गोदाम अधिग्रहित कर लिया जाय। इसमे लापरवाही होने से किसानो से धान खरीद पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है व केन्द्रो पर धान भण्डारण होने से सुरक्षात्मक समस्या हो सकती है। उक्त के पश्चात चावल मिल मे0 संजय ट्रेडिंग कार्पोरेशन गौरीगंज का निरीक्षण जिलाधिकारी के द्वारा जिला खाद्य विपणन अधिकारी अमेठी के साथ किया गया। मौके पर मिल धान की हलिंग करते हुये पायी गयी। निरीक्षण के समय संज्ञान में आया कि सम्बन्धित चावल मिल अपने से सम्बद्ध धान क्रय केन्द्रों के धान की हलिंग का कार्य तीव्रता से नहीं कर रही है, जिस कारण से केन्द्रों पर बड़ी मात्रा में धान भण्डारित हो रहा है। इस सम्बन्ध में जिलाधिकारी द्वारा मिल संचालक अमन भलोटिया को यह स्पष्ट निर्देश दिये गये कि केन्द्रों से प्रेषित धान की हलिंग तीव्रता से करते हुए मानक के अनुसार सी0एम0आर0 (फोर्टिफाइड चावल) का सम्प्रदान भारतीय खाद्य निगम डिपो में किया जाय।

दादरा, ठुमरी, गजल विधाओं के गायक बेगम अख्तर पुरस्कार हेतु 25 दिसम्बर तक करें आवेदन

प्रतापगढ़। जिले में जिलाधिकारी संजीव रंजन ने मंगलवार को बताया है कि संस्कृति विभाग उ0प्र0 द्वारा मल्लिका-ए-गजल बेगम अख्तर की स्मृति में दादरा/ठुमरी/गजल विधाओं में ऐसे प्रतिभावान गायक जिसकी आयु 40 वर्ष से कम न हो को ''बेगम अख्तर पुरस्कार'' से सम्मानित किया जाता है जिसके अन्तर्गत चयनित कलाकार को रूपये 5 लाख की धनराशि एवं अंगवस्त्र व प्रशस्ति पत्र भेंट स्वरूप प्रदान किया जाता है।

उन्होने बताया है कि बेगम अख्तर पुरस्कार के लिये आवेदन पत्र निर्धारित प्रारूप पर दिनांक 25 दिसम्बर 2024 सायं 5 बजे तक निदेशक, संस्कृति निदेशालय, उ0प्र0, जवाहर भवन नवम तल लखनऊ 226001 के कार्यालय में जमा किये जा सकते है। कलाकार उत्तर प्रदेश का मूल निवासी अथवा उसकी कर्मभूमि उत्तर प्रदेश होना चाहिये। कलाकार को अपनी प्रतिभा की दीर्घ साधना एवं श्रेष्ठ उपलब्धि को भरसक निर्विवाद मानदण्डों के आधार पर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त होनी चाहिये। यह पुरस्कार कलाकार के गायन के क्षेत्र में सम्पूर्ण उपलब्धियों के आधार पर प्रदान किया जायेगा न कि किसी एक विशिष्ट संरचना के लिये। बेगम अख्तर पुरस्कार का उद्देश्य दादरा, ठुमरी एवं गजल के क्षेत्र में विशेष प्रतिभावान विशिष्ट गायक को जिसने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से उत्कृष्ट आयाम स्थापित किया हो तथा राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया हो को सम्मानित करना है। पुरस्कार सम्बन्धी नियमावली एवं निर्धारित प्रारूप आवेदन पत्र संस्कृति विभाग उ0प्र0 की वेबसाइट द्धह्लह्लश्च=//ह्वश्चष्ह्वद्य-ह्लह्लद्द.ह्वश्व.ठ्ठद्ब.द्बठ्ठ पर देखा जा सकता है।

राजकीय हाई स्कूल केनौरा के सैकड़ों छात्राओं की टीम शैक्षिक भ्रमण पर रवाना

भदैया, सुलतानपुर। राजकीय हाई स्कूल केनौरा के सैकड़ों छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण, हेतु कुमारगंज अयोध्या के लिए पीटीए अध्यक्ष ने हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की, भदैयां विकास क्षेत्र अंतर्गत राजकीय हाई स्कूल केनौरा के सैकड़ों छात्राओं का शैक्षणिक भ्रमण हेतु प्रधानाचार्य विजय प्रकाश मौर्य की अगुवाई में यात्रा प्रभारी दिलीप कुमार यादव, अवनीश सिंह ग्राम प्रधान मनीष यादव ने नरेंद्रदेव कृषि विश्वविद्यालय के लिए टीम को हरीझंडी दिखाकर रवाना किया ! इस अवसर पर पीटीए अध्यक्ष सुषमा देवी ने कहा कि छात्रों के विकास के लिए एक अहम हिस्सा होता है इसमें छात्रों को किताबों से बाहर निकलकर, वास्तविक दुनिया में अनुभव करने का मौका मिलता है. इससे उन्हें किताबों में पढ़े गए सिद्धातों को समझने में मदद मिलती है, विश्वविद्यालय पहुंचे छात्र छात्राओं ने परिसर में स्थित कृषि ड्रोन ड्रेमोस्ट्रेशन कार्यक्रम में हिस्सा लिया और बताया गया कि ड्रोन जैसी तकनीक से कृषि जगत में और विकास होगा इसका लाभ भी किसानों को मिलेगा, छात्रवृत्ति मत्स्य पालन कुकुट पालन, बकरी, सूअर, दुधारू गाय, भैंस के विभिन्न नस्लों के बारे में जानकारी प्राप्त की ! गेहूं की उन्नत फसल आलू, बैंगन, टमाटर, मूली, लौकी आदि की जानकारी प्राप्त की, इस दौरान प्रसार अधिकारी के एम सिंह ने कहा कि छात्रों के लिए शिक्षक हमेशा आइने का काम करता है, मेहनत व लगन से किसी भी ऊंचाई को छुआ जा सकता है !

पिकप की टक्कर से महिला की मौत

लालगंज, प्रतापगढ़। नेशनल हाइवे पर पैदल बिजली का बिल जमा करने जा रही महिला को तेज रफ्तार से पिकप ने सामने से टक्कर मार दिया। दुर्घटना में महिला की मौके पर ही मौत हो गयी। सूचना घर पहुंची तो परिजनो मे कोहराम मच गया। लीलापुर थाना के कोड़रा मांदूपुर डड़वा निवासी मो. इजराइल की पुत्री जरीना 50 मंगलवार को दोपहर हण्डौर विद्युत उपकेन्द्र बकाया बिल जमा करने जा रही थी। करीब एक बजे नेशनल हाइवे पर दुनिया सिंह का पुरवा के पास लालगंज की तरफ से आ रही पिकप ने महिला को टक्कर मार दिया। महिला की मौके पर ही मौत हो गयी। सूचना मिलने पर लीलापुर पुलिस पहुंची और शव को कब्जे मे लेकर पीएम के लिए भेजवाया। इधर पुलिस ने सगरा सुंदरपुर बाजार से दुर्घटना करने वाली पिकप को चालक समेत गिरफ्त मे ले लिया। जरीना की मौत की खबर घर पहुंची तो परिजनो मे कोहराम मच गया। प्रभारी निरीक्षक का कहना है कि चालक से पूछताछ की जा रही है, तहरीर मिलने पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर कडी कार्रवाई की जाएगी।

गुन्नौर थाना प्रभारी की जगह जगह हो रही है प्रशंसा

गुन्नौर संभल। गुन्नौर थाना प्रभारी कार्यों की थाना क्षेत्र के चैराहों,होटलो ग्रामीण क्षेत्रो में आम जनमानस के द्वारा सराहना की जाती है। यह है गुन्नौर थाना प्रभारी ओपी गौतम के कार्यो से थाना क्षेत्र की आम जनता सराहना करते हुए नही हिचकती है। परन्तु अराजक तत्वों के द्वारा उन्हें पचा पाना सम्भव नही है क्योंकि किसी के भी दबाव में आकर गलत तरीके से परेशान करना उनकी कार्यशैली में नही है। कानून के माहिर ओपी गौतम बडे सरल स्वभाव मृदुभाषी शब्दों का प्रयोग कर जनता की शिकायतों पर त्वरित निराकरण की कार्रवाई करते हुए पीड़ित फरियादी की सहा यता करते है। हमारे संवाददाता फहीम सलमानी ने बताया कि इस प्रकार के पहले थाना प्रभारी ओपी सिंह है जो कि अपनी जेब से खर्च कर गरीबों की सेवा करते हैं नम्बर महीने में प्रभार ग्रहण करते ही जनता के सहयोग से अनेक जो कार्य किए हैं वह काफी प्रशंसनीय है। पहले जन प्रतिनिधियों व क्षेत्रीय संभ्रांत लोगों के साथ बैठक कर क्षेत्र की समस्याओं का सुनकर अवलोकन करना, थाने में फरियादियों के लिए जनता के सहयोग से जनसुवाई कक्ष का निर्माण करवाना, जाम से मुक्त कराकर पुलिस बूथ स्थापित कर जनता को मद्देनजर पैरामिलिट्री व थाना फोर्स के साथ सम्वेदनशील गांवों में पैदल भ्रमण करना, नगर के चौक चौराहों पर जगह जगह कैमरा लगवाना क्षेत्र में, अराजक तत्वों पर पैनी नजर रखना तथा थाना क्षेत्र में अमन चैन कायम रखना पहली प्राथमिकता बताया। थाना प्रभारी ओपी गौतम ने अपने अधीनस्थ अनुशासित उपनिरीक्षकों, दीवानों, आरक्षियों को भी अनु शासन का पाठ पढा कर वास्त विक पीड़ित परिवार की सहा यता करना। सरहंग एवं दबंग किस्म के लोगों से दबे कुचले पीड़ित परिवार को मुक्त कराना फरियादी की एक बार की शिकायत पर सही कार्य कर के प्रसन्न करके भेजना, थाना प्रभारी ओपी गोतम ने यह भी बताया कि हमारे कार्यकाल में अपराधी माफियाओं चाहे जितनी पहुंच वाला हो बख्शा नहीं जाएगा। सही के साथ सही गलत के साथ गलत ही होगा। ईमानदार कर्मठ तेजतर्रार पुलिस अधीक्षक के निर्देशन, एवं अपर पुलिस अधीक्षक के कुशल नेतृत्व के सफल सानिध्य, पर्यवेक्षण में इन्हें कार्य करने का अवसर मिला।

जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट भ्रमणशील रहकर उप निर्वाचन को निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए : सीडीओ

प्रतापगढ़। जनपद की नगर पालिका परिषद बेल्हा के रिक्त अध्यक्ष पद के उप निर्वाचन के मतदान दिनांक 17 दिसम्बर 2024 को जनपद में सकुशल, पवित्रता, शांतिपूर्ण, सुचिता पूर्ण एवं निष्पक्ष ढंग से संपन्न कराने के लिए जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव रंजन के कुशल निर्देशन में विकास भवन सभागार में मंगलवार को जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट का प्रथम प्रशिक्षण संपन्न हुआ जिसमें सुपर मास्टर ट्रेनर प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कालेज रामपुर कांपा डॉ विंध्याचल सिंह, उप प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कालेज डॉ मो0 अनीस एवं एआरपी धर्मेंद्र कुमार ओझा और नसीमुद्दीन द्वारा निर्वाचन की महत्वपूर्ण प्रक्रिया के बारे मे बारीकी से तथा उनके कार्य और दायित्व के बारे मे विस्तार पूर्वक पावरप्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से तथा मत पेटिका को खोलने एवं सीलिंग की प्रक्रिया में विस्तार पूर्वक बताया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी/प्रभारी अधिकारी कार्मिक डा0 दिव्या मिश्रा ने जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट को निर्देशित करते हुए कहा कि निर्वाचन कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलता, संदिग्धता, संलिप्तता की स्थिति में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की सुसंगत धाराओं के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी इसके लिए अधिकारी स्वयं उत्तरदायी होंगे।

निर्वाचन के लिए 3 जोन एवं 6 सेक्टर निर्धारित है, 110 मतदेय स्थल पर निर्वाचन होना है। इस प्रशिक्षण को आप पूरे मनोयोग से प्राप्त करें, निर्वाचन संबंधित सम्पूर्ण प्रक्रिया जान ले एवं अपनी शंकाओं का समाधान मास्टर ट्रेनर से जरूर प्राप्त कर ले और उनसे उनका मोबाइल नंबर प्राप्त कर ले। इस उप निर्वाचन को पारदर्शिता, पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराना है। निर्वाचन आयोग के बताए गए दिशा निर्देशों का पालन पूरी तरह से करना है। उन्होने निर्देशित किया कि जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट भ्रमणशील रहकर नगर पालिका परिषद बेल्हा के अध्यक्ष पद के उप निर्वाचन को निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करायें। मोबाइल फोन मतदेय स्थल पर पूर्णतया प्रतिबंधित है। सुपर मास्टर ट्रेनर डॉ मोहम्मद अनीस एवं धर्मेंद्र कुमार ओझा ने निर्वाचन संबंधित महत्वपूर्ण सावधानियां के बारे में विस्तार पूर्वक बताया और कहां की आप अपने जोन एवं सेक्टर के बारे में जानकारी रखेंगे, हर दो-दो घंटे पर पोलिंग परसेंटेज उपलब्ध कराएंगे एवं बूथ पर कानून व्यवस्था बनाए रखने में अपना संपूर्ण योगदान देंगे। इस अवसर पर रणवीर सिंह, राहुल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

डिजिटल रेप का आरोपी चढ़ा पुलिस के हत्थे

प्रतापगढ़। जिले में कंधई थाना क्षेत्र के मंगरौरा पुलिस चौकी क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में 7 साल की मासूम बच्ची परचून की दुकान पर अकेली बैठी थी। इसी दौरान एक युवक दुकान पर समान खरीदने आया और बच्ची को अकेला देखकर उसके साथ डिजिटल रेप कर फरार हो गया। बच्ची ने अपने परिजनों को घटना की जानकारी दी जिसके बाद बच्ची के पिता की तहरीर पर कंधई पुलिस ने आरोपी युवक के विरुद्ध डिजिटल रेप, पॉक्सो एक्ट व एससी एसटी समेत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर सरगर्मी से आरोपी की तलाश में जुट गयी।

युवक के घर व आसपास काफी तलाश के बावजूद युवक नहीं मिला। मुकदमा दर्ज करने के बाद से ही पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी में सम्भावित स्थानों पर लगातार दबिश दे रही थी। मंगलवार को एसएचओ कंधई अवन कुमार दीक्षित के नेतृत्व में कंधई पुलिस ने आरोपी को थाना क्षेत्र के नरायनपुर चौराहे के समीप गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

राष्ट्रीय प्री बजट बैठक में इंजी0 संजय सिंह कृषि उद्योगों को बढ़ावा देने पर दिए सुझाव

अमेठी। सेन्टर आफ टेक्नोलाजी एण्ड इण्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेन्ट (सीटेड) के निदेशक एवं उद्यमी इंजी0 संजय सिंह द्वारा नये वित्तीय वर्ष 2025-26 बजट से पहले निर्मला सीतारमण,वित्त मंत्री भारत सरकार की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण प्रारंभिक बैठक में 7 दिसम्बर 2024 को कृषि एक्सपर्ट के रूप में प्रतिभाग किया गया। बैठक में ई0 संजय सिंह ने अपने उदबोधन में बहुमूल्य सुझाव दियें, चर्चा के दौरान इंजी0 संजय सिंह ने बताया कि देश के विभिन्न क्षेत्रों से 10 विशेषज्ञों ने बैठक में भाग लिया। गांव स्तर पर छोटे छोटे कृषि उद्योग लगाएं जाए और किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य स्थानीय स्तर पर मिले। इंजी संजय सिंह ने फार्मर प्रोडयूसर कम्पनी के व्यावसायिक कार्य करने के लिए सुलभ वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए सार्थक पहल करने की बात कही है, जीएसटी में छूट दिलाए जाने व फार्म मशीनरी हेतु ऋण मे सुगमता, किसान क्रेडिट कार्ड मे हुए लोन को ससमय भुगतान करता है तो उसे और प्रोत्साहित किया जाए आदि विषयों पर प्रस्तुति दी गई ।इंजी0 संजय सिंह ने आगे बताया कि बैठक में मेरा सुझाव विशेष रूप से किसानों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में नई नीतियों तथा विभिन्न कृषि आयामों को लेकर रहा जिससे औद्योगिक क्रांति हो सके।

और देश प्रदेश के साथ ही क्षेत्र के छोटे बड़े किसानों को उसका लाभ मिले।ई0 संजय सिंह के राष्ट्रीय प्री बजट में भाग लेने पर ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि राकेश विक्रम सिंह, मानसिंह राठौर, डा0 मनोज, संतोष, दिनेश, छोटेलाल, गोरखनाथ, सचीन्द्र, अरविन्द, सुशील, विजय, राकेश, उदयनाथ, प्रज्जवल, सतीष, मधु, नेहा, आदि ने खुशी जाहिर की है।

पायल कपाड़िया

सिंगल वुमन की कल्पना नहीं कर पाता हमारा समाज

कान फिल्म फेस्टिवल में ग्रां प्री जूरी अवॉर्ड जीतने वाली पायल कपाड़िया की फिल्म श्ऑल वी इमेजिन ऐज लाइटश् सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। पायल ने अपने सिनेमाई सफ़र और कान में मिली सफलता पर बात की। पायल कपाड़िया की फिल्म श्ऑल वी इमेजिन ऐज लाइटश् कान फिल्म फेस्टिवल में ग्रां प्री जूरी अवॉर्ड जीतने के बाद सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है पायल कपाड़िया ने अपनी शॉर्ट फिल्म श्आफ्टरनून क्लाउड्सश् और डॉक्यूमेंट्री श्अ नाइट ऑफ नोइंग नथिंगश् के माध्यम से भी कान फिल्म फेस्टिवल में सफलता प्राप्त की है पायल कपाड़िया ने फिल्म निर्माण के लिए को-प्रोडक्शन का सिस्टम अपनाने की बात की, जो स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है दुनिया के प्रतिष्ठित कान फिल्म फेस्टिवल में श्ग्रां प्री जूरीश् अवॉर्ड जीतकर डंका बजाने वाली डायरेक्टर पायल कपाड़िया की फिल्म श्ऑल वी इमेजिन ऐज लाइटश् अब सिनेमाघरों में पहुंच चुकी है। इस फिल्म से पहले पायल की शॉर्ट फिल्म और डॉक्यूमेंट्री फिल्म ने भी कांस में सबका दिल जीता था। ऐसे में, हमने उनके सिनेमाई सफ़र पर की खास बातचीतरू श्ऑल वी इमैजिन ऐज लाइटश् से पहले आपकी शॉर्ट फिल्म श्आफ्टरनून क्लाउड्सश् और डॉक्यूमेंट्री श्अ नाइट ऑफनोइंग नथिंगश् भी कांस में झंडे गाड़ चुकी है। कांस में अपने इस शानदार सफ़र को कैसे देखती हैं? ये फेस्टिवल हमारे जैसे इंडिपेंडेंट फिल्म मेकर्स को बहुत सपोर्ट देते हैं। कान में जब मेरी शॉर्ट फिल्म सिलेक्ट हुई तो मैं वहां अलग-अलग देशों के डायरेक्टर्स से मिली और पूछा तुम लोग आगे कैसे फिल्म बनाओगे? क्योंकि हर देश में यही दिक्कत होती है कि पैसे कहां से आएंगे? तो मुझे पता चला कि एक सिस्टम है जहां हम को-प्रोडक्शन कर सकते हैं। अलग-अलग देशों से पैसे इकट्ठा करके फिल्म बना सकते हैं, जहां हमें विषय को लेकर आजादी हो। जैसे इस फिल्म में ज्यादातर लेडीज ही हैं और उनके साथ फिल्म बना पाना भी इतना आसान नहीं है। चूंकि, मुझे वो एक्सपोजर मिला तो मैं ये फिल्म बना पाई। पहले इंडिया में भी ऐसी ग्रांट्स होती थीं, एनएफडीसी का फिल्म डिविजन था। पीएसबीटी था, जो डॉक्यूमेंट्री को सपोर्ट करता था। कांस के पाम डीश्ओर मुकाबले में 20 साल बाद कोई भारतीय फिल्म सिलेक्ट हुई। इतनी सारी फिल्में बनाने वाला भारतीय सिनेमा अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में क्यों पीछे रह जाता है? जबकि, पहला पाम डीश्ओर भारतीय फिल्म नीचा नगर को ही मिला था? यह बहुत बुरी बात है, इन लोगों को सिलेक्ट करनी चाहिए। मुझे भी समझ नहीं आता कि क्यों इतने साल लग गए। हम इतनी सारी फिल्में बनाते हैं। तमिल, मलयालम, तेलुगु, हर भाषा की फिल्में हैं। हम बहुत बड़ी और महान इंडस्ट्री हैं। हमारी फिल्मों में जितनी विविधता है, वह किसी भी देश में नहीं है। यहां इंडिपेंडेंट फिल्में भी बहुत सारी बनती हैं। जैसे, अभी रीमा दास जी की नई फिल्म विलेज रॉकस्टार्स 2 आई है, जो असम की फिल्म है और हम सब देखेंगे। यह बहुत अच्छी बात है कि हमारी भाषाएं अलग हैं, फिर भी सांस्कृतिक पहचान एक है। मुझे नहीं लगता कि कमी हममें हैं। फिर भी, अगर हम आत्मनिरीक्षण करें और इंडिपेंडेंट फिल्म मेकर्स के पास आवेदन करने के लिए ज्यादा मंच हों तो और अच्छा होगा। फिल्म के शीर्षक में लाइट यानी रोशनी की बात है, जबकि फिल्म काफी समय तक स्याह, सलेटी रंग में डूबी रहती है। ऐसा क्यों? क्योंकि अंधेरे के बिना रोशनी नहीं दिखती और रोशनी के बिना अंधेरा नहीं दिखता। जीवन में भी कभी-कभी जब अंधेरा ही अंधेरा होता है और उससे बाहर निकलने का कोई रास्ता ही नहीं दिखता। हमें लगता है कि ऐसा ही होता है, उस वक्त एक संभावना या उम्मीद देने की मैंने कोशिश की है। जैसे, हमें बचपन से ही बोला जाता है ना कि बेटा ऐसे ही होता है, पर मैं कहना चाहती हूं कि ऐसा नहीं है। और भी चीजें हैं, और भी तरीके हैं।आपको किसी चीज के लिए ऐसा कहा गया कि बेटा, ऐसा ही होता है। समाज के कौन से स्टीरियोटाइप परेशान करते हैं? शादी कर लो। अकेले मत रहो। लोग सोच ही नहीं पाते कि आप एक सिंगल वुमन हो सकती हैं, अकेली रह सकती हैं या अपने पति को छोड़ देना, जो आपको छोड़ गया हो। ये सब चीजें हमारे लिए इतनी आम नहीं है। जब मैं फिल्म के लिए रिसर्च कर रही थी तो एक वकील से मिली। उन्होंने बताया कि ऐसा बहुत होता है कि पति अपनी बीवियों को छोड़कर विदेश में कमाने चले जाते हैं, फिर वापस नहीं आते। ऐसी शादी को अवैध करार देने का कानून है। उन्होंने बताया कि ऐसी कई औरतें आती हैं, जानकारी लेती हैं, पर वापस नहीं आती क्योंकि तलाक लेना या पति को छोड़ना अब भी टैबू है। जैसे, फिल्म में प्रभा का पति कई साल पहले उसे छोड़ गया है, वो अपने पति को सही से जान भी नहीं पाई, पर समाज की नजर में यह रिश्ता पवित्र है। जबकि, अनु का नया-नया रोमांस चल रहा है, अब सही है या गलत, वो उसकी अपनी जिंदगी है पर सोसायटी उसे गलत मानती है। मैं ये जो समाज की नजर में रिश्ते का पैमाना है, उसे भी दिखाना चाहती थी कि ये कथित रूप से जायज-नाजायज वाली बात तय कैसे होती है। इस साल ऑस्कर के लिए लापता लेडीज को चुना गया है पर बहुत से लोगों को लगता है कि आपकी फिल्म को जाना चाहिए था? क्या इसे स्वतंत्र रूप से भेजने की कोई प्लानिंग है? पहले तो मैं कहना चाहूंगी कि मुझे बहुत खुशी है कि लापता लेडीज जैसी शानदार फिल्म ऑस्कर के लिए गई है। इसकी निर्देशक किरण राव की पहली फिल्म धोबी घाट भी मुंबई पर थी। मुझे वह फिल्म बहुत अच्छी लगी थी। बाकी, हमारी फिल्म यूएस में हाल ही में रिलीज हुई है। अब डिस्ट्रीब्यूटर्स देखेंगे कि लोगों की क्या रुचि बन रही है। ऑस्कर आसान नहीं है। इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है और सपोर्ट सिस्टम की भी जरूरत होती है तो देखते हैं।मेनस्ट्रीम सिनेमा के बारे में आपका क्या रुझान है? क्या उन फिल्मों में आपको दिलचस्पी लगती है? मेरी बस एक ही तमन्ना है कि हम जो यह श्मेनस्ट्रीमश् और श्नॉन-मेनस्ट्रीमश् की लाइन खींचते हैं, वह मिट जाए। हमें हर फिल्म को सिर्फ फिल्म की तरह से देखना चाहिए। डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के लिए भी लोग अरे, ये डॉक्यूमेंट्री है, मुझे नहीं देखनी चाहिए। क्यों? हमें हर चीज के लिए खुले विचार रखने चाहिए। फिल्म में आलिया भट्ट हों या कनी कुश्रुति हो, पर फिल्म तो फिल्म है। हमें हर तरह के सिनेमा के लिए ओपन होना चाहिए।फिल्म में आपने अपनी नायिकाओं पार्वती, प्रभा और अनु के बीच जो बहनापा दिखाया है, वह कितना जरूरी लगता है? बहुत जरूरी लगता है। आप देखिए, हमारे जो मेनस्ट्रीम सीरियल्स हैं, उनमें ज्यादातर यही दिखाया जाता है कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है, जिसमें इतनी सचाई है नहीं। ऐसा औरतों की वजह से नहीं है। वो एक सिस्टम बना हुआ है जो हमें एक-दूसरे को सपोर्ट नहीं करने देता। हमारे भीतर पुरुषवादी सोच इतनी भर दी गई है कि हमें लगता है कि औरत ही औरत के खिलाफहै, मगर सच यह नहीं है, तो मुझे उस चीज को आगे लाना था। साथ ही, मैंने महसूस किया है कि जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ रही है, मेरी अपने दोस्तों पर निर्भरता, उन पर भरोसा बढ़ता जा रहा है। मेरे एफटीआईआई के दोस्त मेरा परिवार बन चुके हैं, तो मैं फिल्म के जरिए अपनी गर्लफ्रेंड्स को शुक्रिया भी कहना चाहती थी।

फिल्म चमेली करीना कपूर की पॉपुलर फिल्मों में से एक है। एक्ट्रेस ने करियर के पीक पर फिल्म चमेली में काम किया था। इस फिल्म में करीना ने सेक्स वर्कर की भूमिका निभाई थी।

एक्ट्रेस ने फिल्म में इंटीमेट सीन्स दिए बिना अपने किरदार को निभाया था। फिल्म की रिलीज के बाद करीना ने एक इंटरव्यू में अपने रोल को फिल्म प्यासा में वहीदा रहमान के रोल के साथ कंपेयर किया था। करीना ने बताया कि कुछ लोगों का कहना था कि फिल्म चमेली में सेक्स अपील की कमी थी।इंटीमेट सीन्स को लेकर बोलीं करीना करीना कपूर ने सयैद फिरदौस अशरफ के साथ बातचीत में कहा था कि 'जब इंडस्ट्री के लोग चमेली फिल्म को देख रहे थे, तो वो कह रहे थे कि अरे चमेली में इंटीमेट सीन्स मिसिंग थे। वो यह नहीं समझते कि प्यासा फिल्म में वहीदा जी ने भी इंटीमेट सीन्स नहीं किए थे। मुझे दुख है कि लोग राज कपूर की पोती से ऐसे सीन्स करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं।' मल्लिका शेरावत को भी सुनाई खरी-खोटी करीना कपूर ने इंटरव्यू के दौरान मल्लिका शेरावत को भी खूब सुनाई थी। दरअसल, मल्लिका शेरावत ने कहा था कि राज कपूर की हिरोइनों ने भी खुद को स्क्रीन पर एक्सपोज किया था। जिसका जवाब देते हुए करीना ने कहा, उन्हें समझ नहीं आता कि वह क्या बोल रही हैं। उन्होंने खुद को मजाक बना लिया है। उन्हें ये सोचना चाहिए कि वो एक लीजेंड के बारे में बात कर रही हैं। राज कपूर ने स्क्रीन पर हमेशा महिलाओं को गरीमा और सलीके के साथ पेश किया है। करीना को अच्छी लगी थी मर्डर फिल्म करीना ने आगे कहा कि मल्लिका की फिल्म मर्डर में बहुत ज्यादा एक्सपोजर था। हालांकि एक्ट्रेस ने फिल्म को क्रिटिसाइज करने से मना करते हुए कहा कि वह मर्डर के मेकर्स का पब्लिसिटी स्टंट था। मैंने फिल्म देखी है यह अच्छी फिल्म है, मुझे बस लगा कि उसमें बहुत ज्यादा एक्सपोजर था। साल 2003 में आई थी करीना की फिल्म चमेली साल 2003 में रिलीज हुई थी चमेली बता दें, करीना कपूर की फिल्म चमेली साल 2003 में सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। इसमें उन्होंने सेक्स वर्कर चमेली का किरदार निभाया था। फिल्म का डायरेक्शन सुधीर मिश्रा ने किया था। हाल ही में सिंघम अगेन में नजर आई थीं एक्ट्रेस करीना कपूर का वर्कफ्रंट करीना कपूर के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह हाल ही में सिंघम अगेन में नजर आई थीं। फिल्म में एक्ट्रेस ने माता सीता का किरदार निभाया है। साथ ही एक्ट्रेस करण जौहर की फिल्म तख्त में भी नजर आएंगी।

आज हम आपको इंडस्ट्री के उस एक्टर से मिलवा रहे हैं. जिनके संस्कार एक बार उनके लिए मुसीबत बन गए और उन्हें एक फिल्म के सेट से धक्के मारकर निकाल दिया गया. आज हम आपको इंडस्ट्री के उस एक्टर से मिलवा रहे हैं. जिनके संस्कार एक बार उनके लिए मुसीबत बन गए और उन्हें एक फिल्म के सेट से धक्के मारकर निकाल दिया गया.महेश भट्ट ने ना सिर्फकई शानदार फिल्में बॉलीवुड को दी हैं बल्कि अपनी तल्खमिजाजी के लिए भी वो खासे मशहूर हैं. एक बार सालों पहले उन्होंने एक एक्टर को सेट से धक्के मारकर निकाला था. वो एक्टर आज बॉलीवुड का बड़ा नाम बन चुके हैं. बात कर रहे हैं. आशुतोष राणा की. जिनकी शानदार एक्टिंग ही नहीं बल्कि सौम्य अंदाज हर किसी को भाता है. आशुतोष राणा ने अपने दो दशक लंबे करियर में हर तरह के किरदार में अपनी एक्टिंग को साबित किया है. वहीं आशुतोष राणा एक अच्छे कवि भी हैं और भारतीय संस्कारों के पक्षधर भी हैं. उनकी भाषा पर पकड़ का हर कोई कायल है.दरअसल आशुतोष राणा एनएसडी से कोर्स पूरा करने के बाद काम की तलाश में संघर्ष कर रहे थे तो इस दौरान वो महेश भट्ट के भी संपर्क में आए.कहा जाता है कि एक बार महेश भट्ट ने आशुतोष राणा को इसलिए शूटिंग के सेट्स से बाहर कर दिया था क्योंकि वो बार-बार उनके पैर छूते थे. महेश भट्ट ना सिर्फ आशुतोष पर बेहद गुस्सा थे बल्कि असिस्टेंट डायरेक्टर्स की भी क्लास लगा दी. महेश भट्ट ने उनसे पूछा कि कैसे तुम लोगों ने एक ऐसे इन्सान को मेरे शूटिंग सेट्स पर घुसने की परमिशन दी.हालांकि आशुतोष राणा का ये अंदाज आज भी नहीं बदला है. हालांकि बाद में इसे लेकर एक बार महेश भट्ट ने उनसे पूछ ही लिया कि आखिर तुम ये क्यों करते हो, मुझे इस चीज से नफ़रत है.इसके बाद आशुतोष राणा ने उन्हें जवाब दिया कि, 'ये मेरे संस्कारों में है और मैं इसे किसी सूरत में नहीं छोड़ सकता.' आशुतोष राणा का ये जवाब महेश भट्ट के मन को छू गया और उन्होंने आशुतोष को अपने गले से लगा लिया था. इसके बाद महेश भट्ट ने आशुतोष को अपने सीरियल स्वाभिमान में विलेन के रोल में कास्ट किया था.

एमएस धोनी ने बनाया ये खास रिकॉर्ड, अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान को पछाड़ा

धोनी का क्रेज जितना क्रिकेट मैदान पर है उतना ही ब्रांड एंडोर्समेंट के मामले में भी है। क्रिकेट से संन्यास लेने के इतने साल बाद भी धोनी की ब्रांड वैल्यू कम नहीं बल्कि और ज्यादा बढ़ी है। ज्ड मीडिया रिसर्च की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार, 43 वर्षीय धोनी ने अब ब्रांड एंडोर्समेंट के मामले में अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान को भी पछाड़ दिया है।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान एमएस धोनी की लोकप्रियता संन्यास लेने के 5 साल बाद भी कायम है। धोनी का क्रेज जितना क्रिकेट मैदान पर है उतना ही ब्रांड एंडोर्समेंट के मामले में भी है। क्रिकेट से संन्यास लेने के इतने साल बाद भी धोनी की ब्रांड वैल्यू कम नहीं बल्कि और ज्यादा बढ़ी है। ज्ड मीडिया रिसर्च की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार, 43 वर्षीय धोनी ने अब ब्रांड एंडोर्समेंट के मामले में अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान को भी पछाड़ दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, एमएस धोनी 2024 में सबसे ज्यादा ब्रांड एंडोर्समेंट पाने वाले भारतीय सेलिब्रिटी हैं। उनके पास कुल 42 एंडोर्समेंट हैं। अमिताभ बच्चन 41 एंडोर्समेंट के साथ सूची में दूसरे स्थान पर हैं, जबकि शाहरुख खान 34 डील के साथ तीसरे स्थान पर हैं। ज्ड मीडिया रिसर्च यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका नीलसन और यूके के कैंटर का एक संयुक्त उद्यम है। वहीं टैम मीडिया रिसर्च के अनुसार, इन आंकड़ों में केवल ब्रांड और वाणिज्यिक विज्ञापन शामिल हैं। इसमें प्रोमो और सोशल मीडिया विज्ञापन शामिल नहीं हैं। बता दें कि, एमएस धोनी आईपीएल 2025 में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए एक्शन में दिखेंगे। फ्रेंचाइजी ने उन्हें आईपीएल नीलामी से पहले अनकैप्ड खिलाड़ी के तौर पर 4 करोड़ रुपये में रिटेन किया था। एमएस धोनी को अनकैप्ड खिलाड़ी के तौर पर इसलिए रिटेन किया गया, क्योंकि उन्हें अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लिए 5 साल से ज्यादा का समय हो गया है।

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए जोर लगाएंगी टीमें, मोहम्मद शमी पर रहेंगी नजरें

बंगलुरु। टखने की सर्जरी से उबरने के बाद घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर रहे भारतीय तेज गेंदबाज शमी बुधवार को जब सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के मुकाबले में उतरेंगे तो उनके सामने बंगाल के लिए एक और प्रभावी प्रदर्शन के साथ अपनी फिटनेस से जुड़ी चिंताओं को दूर करने की चुनौती होगी। भारतीय टी20 घरेलू टूर्नामेंट सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल मुकाबले बुधवार को खेले जाएंगे। बंगाल का सामना बड़ौदा से होगा जिसमें भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी पर सभी की नजरें होंगी।

माना जा रहा है कि शमी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफपांच मैचों की टेस्ट सीरीज के अंतिम दो मैचों में खेल सकते हैं और इसके लिए एनसीए मेडिकल टीम के सदस्य उन पर नजर रखे हुए हैं। टखने की सर्जरी से उबरने के बाद घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर रहे भारतीय तेज गेंदबाज शमी बुधवार को जब सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के मुकाबले में उतरेंगे तो उनके सामने बंगाल के लिए एक और प्रभावी प्रदर्शन के साथ अपनी फिटनेस से जुड़ी चिंताओं को दूर करने की चुनौती होगी। बंगाल ने सोमवार को शमी के ऑलराउंड खेल से चंडीगढ़ पर तीन रन की रोमांचक जीत से अंतिम आठ में अपनी जगह पक्की की। शमी ने किया है प्रभावी प्रदर्शन शमी ने 10वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए 17 गेंद में नाबाद 32 रन बनाने के बाद चार ओवर में सिर्फ25 रन खर्च कर एक सफलता हासिल की। उन्होंने इस दौरान 13 डॉट गेंदें डाली और अच्छी गति से गेंदबाजी की। चोट से वापसी के बाद शमी ने एक रणजी और आठ टी-20 मैच खेले हैं। उन्होंने इस दौरान 64 ओवर की गेंदबाजी में 16 विकेट लिए हैं। बड़ौदा की टीम इस सत्र मे शानदार लय में है। कृणाल पांड्या की अगुआई वाली टीम ने अपने पिछले मैच में सिक्किम के खिलाफ पांच विकेट पर 349 रन बनाए थे। यह टी20 क्रिकेट का नया रिकॉर्ड है। टीम ने इस मैच में 37 छक्के जड़ने का भी रिकॉर्ड बनाया था। उत्तर प्रदेश के सामने दिल्ली की चुनौती अन्य मैच में उत्तर प्रदेश के सामने दिल्ली की चुनौती होगी। रिंकू सिंह और विपरज निगम ने पिछले मैच में तीन ओवर में 48 रन की साझेदारी कर आंध्र के खिलाफउत्तर प्रदेश को चार विकेट से जीत दिलाई थी। उत्तर प्रदेश को इन दोनों के अलावा अन्य खिलाड़ियों से भी प्रभावी प्रदर्शन की उम्मीद होगी। दिल्ली ने ग्रुप चरण में सात मैचों में छह जीत के साथ अंतिम आठ का टिकट कटाया। प्रियांश आर्या एक शतक और एक अर्धशतक के साथ सत्र में 252 रन बना चुके हैं। यश ढुल (185), हिम्मत सिंह (179) और आयुष बडोनी (102) अंतिम आठ मुकाबले में बल्लेबाजी में अहम भूमिका निभाना चाहेंगे। अलुर में खेले जाने वाले क्वार्टर फाइनल मैचों में मध्यप्रदेश के सामने सौराष्ट्र जबकि मुंबई के सामने विदर्भ की चुनौती होगी। मुंबई ने नॉकआउट चरण के लिए ऑलआउंडर शम्स मुलानी को टीम में शामिल नहीं किया है। कप्तान श्रेयस अय्यर शानदार लय में है। उन्होंने 200 की स्ट्राइक रेट और 69.50 की औसत से 278 रन बनाये है जिसमें एक शतक और एक अर्धशतक शामिल है। सौराष्ट्र और मध्यप्रदेश के मैच में भारतीय खिलाड़ी रजत पाटीदार और आईपीएल नीलामी में 23.75 करोड़ रुपये की बोली हासिल करने वाले वेंकटेश अय्यर पर नजरें होगी। मध्यप्रदेश के कप्तान पाटीदार 253 रन के साथ टीम के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं।

वर्ल्ड चैंपियन बनने से दो जीत दूर हैं डी गुकेश, जानें मुकाबले से जुड़ी लाइव स्ट्रीमिंग

डी गुकेश बुधवार को वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप के 13वें राउंड के मैच के लिए 11 दिसंबर को मौजूदा चौंपियन डिंग लिरेन से भिड़ेंगे। सबसे कम उम्र के चौलेंजर 18 वर्षीय गुकेश और चीन के डिंग लिरेन के बीच दिलचस्प मुकाबला चल रहा है जिसमें कोई भी खिलाड़ी लंबे समय तक अपनी बढ़त कायम नहीं रख पाया है।

भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश बुधवार को वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप के 13वें राउंड के मैच के लिए 11 दिसंबर को मौजूदा चौंपियन डिंग लिरेन से भिड़ेंगे। सबसे कम उम्र के चौलेंजर 18 वर्षीय गुकेश और चीन के डिंग लिरेन के बीच दिलचस्प मुकाबला चल रहा है जिसमें कोई भी खिलाड़ी लंबे समय तक अपनी बढ़त कायम नहीं रख पाया है। एक दिन के रेस्ट के बाद दोनों खिलाड़ी बुधवार को फिर से एक दूसरे का सामना करेंगे। इस 14 दौर के मुकाबले में 12 दौर के बाद स्कोर 6-6 से बराबरी है। जो भी खिलाड़ी सबसे पहले 7.5 तक पहुंचेगा वह वर्ल्ड चौंपियन बन जाएगा। अगर 14 दौर के बाद भी स्कोर बराबर रहता है तो फिर टाइब्रेक का सहारा लिया जाएगा। गुकेश के पास 11वीं बाजी जीतने के बाद 7.5 के जादुई अंक तक पहुंचने का मौका था लेकिन वह अगली बाजी हार गए। भारतीय खिलाड़ी को अगली बाजी सफेद मोहरों से खेलनी है और पूरा विश्वास है कि क्लासिकल प्रारूप में खेले जा रहे इस मुकाबले की इस अहम बाजी में वह आक्रामक रवैया अपनाएंगे। अब जबकि मुकाबला रोमांचक मोड़ पर पहुंचा गया है तब जो भी खिलाड़ी धैर्य से काम लेगा वह फायदे में रहेगा। डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम कब खेला जाएगा?डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम 11 दिसंबर को दोपहर ढाई बजे और 14वां गेम 12 दिसंबर को खेला जाएगा। डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम कहां खेला जाएगा? डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम सिंगापुर के रिसॉर्ट्स वर्ल्ड सेंटोसा में खेला जाएगा। डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम का सीधा प्रसारण कहां देखें? डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम सीधा प्रसारण भारत में उपलब्ध नहीं होगा। डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम की लाइव स्ट्रीमिंग कहां देखें? डी गुकेश और डिंग लिरेन के बीच फिडे वर्ल्ड चेस चौंपियनशिप 2024 फाइनल 13वां गेम थ्यम् और बैमे.बवउ के यूट्यूब चौनल पर मौजूद है।

खेलों को बढ़ावा देने और निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कानून बनाएगा पंजाब

भगवंत मान ने एक नया कानून बनाने की मंजूरी दे दी जिसका उद्देश्य राज्य में खेलों को बढ़ावा देना और खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करना है। प्रस्तावित कानून- पंजाब राज्य अधिनियम 2024 - खेल संघों के कामकाज में पारदर्शिता के लिए एक कानूनी ढांचा बनाने में भी एक लंबा रास्ता तय करेगा।

चंडीगढ़ । पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने एक नया कानून बनाने की मंजूरी दे दी जिसका उद्देश्य राज्य में खेलों को बढ़ावा देना और खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करना है। प्रस्तावित कानून- पंजाब राज्य (खेलों का विकास और प्रोत्साहन) अधिनियम 2024 - खेल संघों के कामकाज में पारदर्शिता के लिए एक कानूनी ढांचा बनाने में भी एक लंबा रास्ता तय करेगा। खेल विभाग की एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री मान ने कहा कि अधिनियम का उद्देश्य राज्य में खेलों के विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की अच्छी प्रथाओं को अपनाना और खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करना है। मान ने कहा कि अधिनियम खेल संघों के कामकाज में पारदर्शिता के लिए एक कानूनी ढांचा बनाने में भी एक लंबा रास्ता तय करेगा। उन्होंने कहा, ''यह राज्य स्तर पर अपने जिलों या राष्ट्रीय स्तर और अन्य प्रतियोगिताओं में राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन भी सुनिश्चित करेगा।'' मान ने कहा कि यह खेल संघों द्वारा सरकारी धन के उचित उपयोग में भी मदद करेगा। प्रस्तावित अधिनियम के अनुसार प्रत्येक जिले में एक विशिष्ट खेल के लिए एक संघ पंजीकृत किया जाएगा।

डब्ल्यूटीए की साल की सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ी का पुरस्कार जीता

सेंट पीटर्सबर्ग (अमेरिका) । स्टार टेनिस खिलाड़ी एरिना सबालेंका को पहली बार डब्ल्यूटीए की साल की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार मिला। बेलारूस की 26 वर्षीय सबालेंका ने 2024 में दो ग्रैंड स्लैम खिताब जीते और दुनिया की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी भी बनीं। टेनिस मीडिया के मतदान के अन्य परिणामों में ऐमा नवारो को सबसे अधिक सुधार करने वाली खिलाड़ी के रूप में सम्मानित किया गया। पाउला बडोसा को साल में सर्वश्रेष्ठ वापसी करने वाली खिलाड़ी और लुलु सन को साल की सर्वश्रेष्ठ नयी खिलाड़ी चुना गया। सारा इरानी और जैस्मिन पाओलिनी को साल की सर्वश्रेष्ठ युगल टीम चुना गया। सबालेंका ने 2024 में जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन और सितंबर में अमेरिकी ओपन के साथ इस सत्र में दो अन्य खिताब जीते। उनका जीत-हार का रिकॉर्ड 56-14 रहा। उन्होंने लगभग एक करोड़ डॉलर की पुरस्कार राशि जीती। उन्होंने अक्टूबर में ईगा स्वियातेक को पछाड़कर शीर्ष रैंकिंग हासिल की।

वैभव सूर्यवंशी की काबिलियत पर इस पाकिस्तानी खिलाड़ी ने उठाए सवाल, वीडियो किया शेयर

आईपीएल 2025 के ऑक्शन में यूं तो भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। हालांकि, सबसे ज्यादा हैरानी लोगों को राजस्थान रॉयल्स द्वारा 13 साल के वैभव सूर्यवंशी को 1 करोड़ 10 लाख में खरीदने पर हुई। भारत के इस युवा करोड़पति से पाकिस्तानियों को भी मिर्ची लग रही है। जिस कारण पाकिस्तान के पूर्व गेंदबाज ने वैभव की काबिलियत पर सवाल खड़ा किया है। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज जूनेद खान ने वैभव का वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में वैभव श्रीलंका के गेंदबाज दुलनिथ सिगेरा की गेंद पर छक्के लगाते हुए नजर आ रहे हैं। उनके शानदार शॉट्स की तारीफकरने की जगह जूनेद ने उनपर सवाल खड़े किए हैं। जूनेद ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया। जिसके कैप्शन में उन्होंने लिखा कि, क्या 13 साल का बच्चा इतने लंबे छक्के लगा सकता है। उन्होंने कैप्शन में इसके अलावा कुछ नहीं लिखा लेकिन भारतीय फैंस ने उन्हें आड़े हाथों लिया।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के पहले दिन के सभी टिकट बिके

मेलबर्न । भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर 26 दिसंबर से शुरू होने वाले चौथे टेस्ट मैच के पहले दिन (बॉक्सिंग डे) के सभी टिकट बिक गए हैं जिससे बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के लिए खेली जा रही पांच मैच की इस श्रृंखला के प्रति लोगों की दिलचस्पी का पता चलता है। टिकटों की यह भारी मांग ऑस्ट्रेलिया की श्रृंखला में शानदार वापसी के बाद देखने को मिली है। भारत ने पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट मैच 295 रन से जीता था। ऑस्ट्रेलिया एडिलेड में दूसरे टेस्ट मैच में 10 विकेट से जीत दर्ज करके श्रृंखला को बराबर करने में सफल रहा। बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच से पहले इन दोनों टीम के बीच शनिवार से ब्रिस्बेन में तीसरा टेस्ट मैच खेला जाएगा। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने मंगलवार को एक्स पर पोस्ट किया,''बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के पहले दिन के आम जनता के लिए उपलब्ध सभी टिकट बिक गए हैं। 24 दिसंबर को आम जनता के लिए कुछ और टिकट जारी किए जा सकते हैं।

भारत 14 मार्च से एशियाई कप क्वालीफायर की तैयारी शुरू करेगा, कोच डंतुनम्र ने लंबे शिविर की मांग की

नयी दिल्ली । भारतीय फुटबॉल टीम एएफसी एशियाई कप 2027 क्वालीफायर के लिए अपनी तैयारी 14 मार्च से राष्ट्रीय शिविर के साथ शुरू करेगी जो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के आखिरी लीग मैच के दो दिन बाद होगा। ड्रॉ की पूर्व संध्या पर भारत के कोच मनोलो मार्केज ने अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे को 'लंबे शिविर' का प्रस्ताव दिया। इगोर स्टिमक से पदभार संभालने के बाद मार्केज ने चार मैचों में अभी तक सफलता का स्वाद नहीं चखा है। एआईएफएफ ने एक बयान में कहा, ''अपने विपणन भागीदारों से परामर्श करने के बाद एआईएफएफ को लगा कि राष्ट्रीय शिविर इंडियन सुपर लीग 2024-25 के आखिरी लीग मैच के दो दिन बाद 14 मार्च को शुरू हो सकता है।

भारत के कुश मैनी ने रचा इतिहास, अबू धाबी जीपी में फॉर्मूला 2 कंस्ट्रक्टर्स चौंपियनशिप जीती

कुश मैनी ने फॉर्मूला 2 के 2024 सीजन में फिर से इतिहास रच दिया। इनविक्टा रेसिंग टीम ने थ्वतउनसं 2 कंस्ट्रक्टर्स चौंपियनशिप जीती, जिससे 24 वर्षीय ये खिलाड़ी जूनियर फॉर्मूला के शिखर पर एफआईए कंस्ट्रक्टर्स वर्ल्ड चौंपियनशिप जीतने वाला पहला।

ऑस्ट्रेलिया से क्लीन स्वीप से बचने की कोशिश करेगा भारत

पहले दो मैच में करारी हार से आहत भारतीय महिला टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बुधवार को यहां होने वाले तीसरे और अंतिम एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में क्लीन स्वीप से बचने और अगले साल होने वाले 50 ओवरों के विश्व कप से पहले अपनी कमजोरियों को

दूर करने की कोशिश करेगी। सात बार के विश्व चौंपियन आस्ट्रेलिया ने अभी तक तीन मैच की श्रृंखला में पूरी तरह से दबदबा बनाए रखा है जबकि भारत ने तीनों विभाग बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में खराब प्रदर्शन किया है। दूसरे वनडे में रिकॉर्ड 122 रन की हार से भारत की कमजोरी का पता चलता है। इस मैच में भारतीय बल्लेबाजों ने टुकड़ों में अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन टीम किसी भी समय 372 रन के लक्ष्य तक पहुंचने की स्थिति में नहीं दिखी। भारत को सबसे अधिक निराश उसकी दो स्टार बल्लेबाजों कप्तान हरमनप्रीत कौर और उप कप्तान स्मृति मंधाना ने किया है। मंधाना ने अक्टूबर में न्यूजीलैंड के खिलाफ शतक जड़ा था लेकिन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफपहले दो मैच में वह केवल 17 रन ही बना पाई है। इस सलामी बल्लेबाज की निगाह फॉर्म में लौटने पर टिकी होगी। हरमनप्रीत अपनी अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में बदलने में नाकाम रही है। उन्होंने दो मैच में 57 रन बनाए हैं। भारतीय टीम इस साल के शुरू में टी20 विश्व कप मेंजल्दी बाहर हो गया था और तब से हरमनप्रीत की बल्लेबाजी और कप्तानी पर नजर रखी जा रही है।

तलाश गुमशुदा

नाम- लक्ष्मी प्रसाद
आयू- 44 वर्ष
कद- 5 पिट 2 इंच
रंग- गेंहुआ- लंबा चेहरा काले बाल ।
ये नीली चेकदार शर्ट तथा नीली पैंट तथा पैरों मे कपडे (किरमिच) के जूते पहने हैं ।
लक्ष्मी प्रसाद दिनांक 25/11/2024 को इंदिरा नगर लखनऊ से अपने मूल निवास सीतापूर के लिए निकले थे किन्तु पहुंचे नही तभी से लापता हैं ।
इनके बारे मे कोई भी जानकारी मिले तो कृपया उपरोक्त पते पर साझा करें ।

मुन्नी देवी- पत्नी लक्ष्मी प्रसाद
18/196 इन्दिरानगर लखनऊ
मोबाईल- 8467003528

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा शहीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।